http://amritkalashtimes.com

अमृत कलश टाइम्स

वर्ष : 18
अंक : 100

प्रयागराज गुरुवार 26 दिसम्बर 2024

पृष्ठः- 4, मूल्यः- एक रूपया

पूर्व प्रधानमंत्री वाजपेयी के सुशासन ने भारत को नई ऊंचाइयों पर पहुंचायाः राजनाथ सिंह

लखनऊ । रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने लोकभवन में सुशासन दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि सुशासन की परिके तहत हर व्यक्ति की जरूरतें पूरी होती हैं, वह सुरक्षित महसूस करता है और उसे अपने विचार रखने का अवसर मिलता है। उन्होंने यह भी कहा कि अटल जी के दृष्टिकोण को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आगे बढ़ा रहे हैं। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने ऐसा सुशासन दिया, जिसने भारत को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया और उनके कार्यकाल में आर्थिक वृद्धि दर बढ़कर 8.4 प्रतिशत पर पहुंच गई थी, जो स्वतंत्र भारत की एक ऐतिहासिक उपलब्धि रही। सिंह

ने यहां लोकभवन में सुशासन दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि सुशासन की परिके तहत हर व्यक्ति की जरूरतें पूरी होती हैं, वह सुरक्षित महसूस करता है और उसे अपने विचार रखने का अवसर मिलता है। उन्होंने यह भी कहा कि अटल जी के दृष्टिकोण को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आगे बढ़ा रहे हैं। रक्षा मंत्री ने अटल जी की ऐतिहासिक योजनाओं को याद करते हुए कहा कि उनकी दूरदृष्टि ने भारत को सड़कों, दूरसंचार और ग्रामीण विकास के क्षेत्रों में नई दिशा दी। उन्होंने कहा, ''प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना और अंत्योदय योजना जैसे अभियानों ने भारत के गांवों और गरीबों की जिंदगी बदल दी।'' उन्होंने कहा, ''अटल जी ने न केवल शहरों को सड़कों से जोड़ा, बल्कि गांवों को भी जोड़ा। दूरसंचार क्षेत्र में क्रांति लाकर उन्होंने हर हाथ में मोबाइल का सपना पूरा किया। मोदी सरकार ने 1,500 से अधिक अनावश्यक कानूनों को खत्म कर कारोबारी सुगमता में भारत को 50वें पायदान पर पहुंचाया। जल्द ही भारत शीर्ष 20 देशों में शुमार होगा।'' उन्होंने डीबीटी (प्रत्यक्ष लाभ अंतरण) योजना की सफलता पर जोर देते हुए कहा कि अब गरीबों को सीधे उनके खाते में पैसा पहुंचता है। उन्होंने कहा, ''पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने एक बार कहा था कि केंद्र से 100 पैसा भेजा जाता है, लेकिन लाभार्थियों तक केवल 14 पैसा पहुंचता है, लेकिन मोदी सरकार ने इस भ्रष्टाचार को खत्म किया।'' उन्होंने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सराहना करते हुए कहा कि उनकी सरकार ने भयमुक्त समाज की स्थापना की है। सिंह ने कहा कि गरीबों को मकान उपलब्ध कराने के मामले में यह राज्य देश में पहले पायदान पर है। उन्होंने कहा, ''चार करोड़ से अधिक गरीबों को पक्के मकान मिले हैं, जिनमें से 70 प्रतिशत मकान महिलाओं के नाम दर्ज हैं।'' रक्षा मंत्री ने कहा कि जहां राज्य में कानून व्यवस्था सुधरी है और चार करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आए हैं, वहीं आयुष्मान भारत योजना के तहत गरीबों को पांच लाख रुपये तक का निःशुल्क इलाज मिल रहा है।

रामभद्राचार्य बोले– भागवत संघ के संचालक, हमारे नहीं

- आरएसस प्रमुख बोले थे, लोगों को लगता है राममंदिर जैसे मुद्दे उठाकर हिंदुओं के नेता बन सकते हैं

चित्रकूट। जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक (आरएसस) प्रमुख मोहन भागवत के बयान पर नाराजगी जताई है। स्वामी रामभद्राचार्य ने न्यूज एजेंसी के साथ बातचीत में कहा कि संघ प्रमुख का व्यक्तिगत बयान है। ये उन्होंने अच्छा नहीं कहा। संघ भी हिंदुत्व के आधार पर बना है। जहां–जहां मंदिर या मंदिर के अवशेष मिल रहे हैं, उन्हें हम लेंगे। जहां अवशेष नहीं हैं, वहां नहीं लेंगे। वे (मोहन भागवत) संघ प्रमुख हैं, हम धर्माचार्य हैं। हमारा क्षेत्र अलग है, उनका अलग। वे संघ के सरसंघचालक हैं, हमारे नहीं। राम मंदिर पर बयान देना दुर्भाग्यपूर्ण है। एक यहूदी को कोई मार देता है तो इजराइल ऐसी की तैसी कर देता है। हजारों हिंदू मारे जा रहे हैं, सरकार कुछ कर नहीं रही है। सरकार को चाहिए कठोरता से बांग्लादेश से निपटे। भागवत ने कहा था कि राम मंदिर के निर्माण के बाद कुछ लोगों को लगता है कि वे नई जगहों पर इसी तरह के मुद्दों को उठाकर हिंदुओं के नेता बन सकते हैं। वहीं, ज्योतिषपीठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने भी संघ प्रमुख मोहन भागवत की आलोचना की है। शंकराचार्य ने उन पर राजनीतिक सुविधा के अनुसार बयान देने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा– जब सत्ता हासिल करनी थी, तब वे मंदिर–मंदिर करते थे। अब सत्ता मिल गई तो मंदिर नहीं ढूंढने की नसीहत दे रहे हैं। शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद ने ये भी कहा– अगर हिंदू समाज अपने मंदिरों का पुनरुद्धार कर उन्हें पुनः संरक्षित करना चाहता है तो इसमें गलत क्या है। उन्होंने कहा कि अतीत में हिंदू समाज के साथ बहुत अत्याचार हुआ है और हिंदू धर्मस्थलों को तहस–नहस किया गया है।

चुनाव नियमों में बदलाव को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती, कांग्रेस ने याचिका लगाई

❍ केंद्र ने पोलिंग बूथ के फुटेज सार्वजनिक करने से इनकार किया था

नयी दिल्ली। कांग्रेस ने मंगलवार को चुनाव से जुड़े इलेक्ट्रॉनिक डॉक्यूमेंट्स पब्लिक करने से रोकने के नियम को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है। केंद्र सरकार ने 20 दिसंबर को पोलिंग स्टेशन के सीसीटीवी, वेबकास्टिंग फुटेज और उम्मीदवारों की वीडियो रिकॉर्डिंग जैसे कुछ इलेक्ट्रॉनिक डॉक्यूमेंट्स को पब्लिक करने से रोकने के लिए चुनाव नियमों में बदलाव किया था। याचिका पर कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा चुनाव आयोग को ऐसे महत्वपूर्ण कानून (चुनाव संचालन नियम, 1961) में एकतरफा संशोधन करने की अनुमति नहीं दी जा सकती। नियमों में बदलाव के बाद 21 दिसंबर को रमेश ने कहा था चुनाव आयोग पारदर्शिता से इतना डरता क्यों है। आयोग के इस कदम को जल्द ही कानूनी चुनौती दी जाएगी। चुनाव आयोग (ईडी) की सिफारिश पर कानून मंत्रालय ने 20 दिसंबर को द कंडक्ट ऑफ इलेक्शन रूल 1961 के नियम 93(2)(।) में बदलाव किया है। नियम 93 कहता है–चुनाव से जुड़े सभी दस्तावेज पब्लिकली उपलब्ध रहेंगे। इसे बदलकर चुनाव से जुड़े सभी दस्तावेज शनियमानुसार पब्लिकली उपलब्ध रहेंगे कर दिया गया है। अधिकारियों ने बताया था कि एआई के इस्तेमाल से पोलिंग स्टेशन के सीसीटीवी फुटेज से छेड़छाड़ करके फेक नैरेटिव फैलाया जा सकता है। इसी कारण इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड पब्लिक करने पर रोक लगाई गई है। हालांकि बदलाव के बाद भी ये रिकार्ड्स कैंडिडेट्स के लिए उपलब्ध रहेंगे। अन्य लोग इसे लेने के लिए कोर्ट जा सकते हैं। दरअसल, पंजाब–हरियाणा हाईकोर्ट ने एक केस में हरियाणा विधानसभा चुनाव से जुड़े दस्तावेज याचिकाकर्ता से साझा करने का निर्देश दिया था। इसमें सीसीटीवी फुटेज को भी नियम 93(2) के तहत माना गया था। हालांकि चुनाव आयोग ने कहा था कि इस नियम में इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड शामिल नहीं है। इस अस्पष्टता को दूर करने के लिए नियम में बदलाव किया गया है। ईडी ने बताया कि नामांकन फॉर्म, चुनाव एजेंटों की नियुक्ति, चुनाव रिजल्ट और इलेक्शन

अकाउंट स्टेटमेंट जैसे दस्तावेजों का उल्लेख कंडक्ट ऑफ इलेक्शन रूल में किया गया है। आचार संहिता के दौरान उम्मीदवारों के सीसीटीवी फुटेज, वेबकास्टिंग फुटेज और वीडियो रिकॉर्डिंग जैसे इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेज इसके दायरे में नहीं आते हैं।

संभल मस्जिद विवादः सर्वेक्षण रिपोर्ट ३ जनवरी को होगी दाखिल

❍ एससी ने छह जनवरी तक कोई कार्रवाई न करने दिया है आदेश

संभल। उत्तर प्रदेश के संभल जिले की जामा मस्जिद के सर्वेक्षण की रिपोर्ट दो या तीन जनवरी को अदालत में पेश की जाएगी। एडवोकेट कमिश्नर रमेश सिंह राघव ने मंगलवार को यह जानकारी दी। एडवोकेट कमिश्नर राघव ने बताया, ष्शाही जामा मस्जिद की सर्वेक्षण रिपोर्ट लगभग अंतिम चरण में है और पूरी हो गई है। कुछ तकनीकी मुद्दे हैं, जिन्हें आज ठीक कर लिया जाएगा। चूंकि यह अदालत का आखिरी कार्य दिवस है, जिसके बाद यह बंद हो जाएगी। उन्होंने कहा कि जहां तक सर्वेक्षण रिपोर्ट का सवाल है, यह दो या तीन जनवरी को दाखिल की जाएगी। राघव ने पत्रकारों से कहा श्श्उच्चतम न्यायालय ने सुनवाई अदालत को छह जनवरी तक कोई कार्रवाई न करने का स्थगन आदेश दिया है, इसलिए सर्वेक्षण रिपोर्ट इस तिथि से पहले दाखिल की जाएगी। स्थानीय अदालत ने 19 नवंबर को हिंदू पक्ष की दलील पर गौर करने के बाद अधिवक्ता आयुक्त द्वारा मस्जिद के सर्वेक्षण के लिए एकपक्षीय आदेश पारित किया था जिसमें दावा किया गया था कि मस्जिद का निर्माण मुगल बादशाह बाबर ने 1526 में एक मंदिर को ध्वस्त करके किया था। सर्वेक्षण के दूसरे दौर में 24 नवंबर को विरोध

प्रदर्शन कर रहे स्थानीय लोगों की सुरक्षाकर्मियों से झड़प हो गई, जिससे बड़ी हिंसा हुई।

अजित पवार ने अधिकारियों को कर, राजस्व सृजन प्रक्रिया में सुधार करने के दिए निर्देश

मुंबई। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने मंगलवार को राज्य के वित्त मंत्री का कार्यभार संभालने के बाद प्रशासन को कर संग्रह और राजस्व सृजन की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित और बेहतर बनाने का निर्देश दिया। पवार ने राज्य सचिवालय 'मंत्रालय में वित्त, योजना और आबकारी विभागों का कार्यभार संभाला। उन्होंने अधिकारियों के साथ एक बैठक की अध्यक्षता की और उन्हें कर संग्रह और राजस्व सृजन प्रक्रिया को सुव्यवस्थित और बेहतर बनाकर परिणाम देने का निर्देश दिया। अजित पवार ने लंबित योजनाओं, राजस्व परिदृश्य और निधि संबंधी जरूरतों की समीक्षा की।

शिमला कार्निवल में सीएम ने डाली नाटी

❍ सांस्कृतिक परेड को दिखाई हरी झंडी

शिमला। शिमला में आज से विंटर कार्निवल शुरू हो गया है। शिमला के मॉल रोड पर विभिन्न स्वयं सहायता समूहों की बड़ी संख्या में महिलाओं ने पारंपरिक परिधानों में नाटी डाली। इस दौरान देशभर से शिमला पहुंचे टूरिस्ट ने इसका आनंद उठाया। मुख्यमंत्री सुखविंदर सुक्खू ने भी मॉल रोड पर नाटी डाली। इससे पहले उन्होंने सांस्कृतिक परेड को हरी झंडी दिखाई। रिज पर अगले 10 दिन तक रौनक रहेगी। विंटर कार्निवल के लिए शिमला को दुल्हन की तरह सजाया गया है। मगर आज दोपहर बाद बीच–बीच में हो रही बारिश ने इसमें खलल डाल दिया। विंटर कार्निवल में 10 दिन तक बॉलीवुड, पंजाबी और लोकल गायक रिज पर देशभर से यहां पहुंचने वाले टूरिस्ट का मनोरंजन करेंगे। कार्निवल की पहली स्टार नाइट आज होगी। इसमें लोक निर्माण एवं शहरी विकास मंत्री विक्रमादित्य सिंह बतौर मुख्य अतिथि शिरकत करेंगे। आज बॉलीवुड गायक शबाब साबरी अपनी आवाज का जादू बिखेरेंगे। शिमला में टूरिज्म को बढ़ावा और क्रिसमस और न्यू ईयर पर शिमला आने वाले टूरिस्टों के मनोरंजन के मकसद से नगर निगम शिमला ने बीते साल से विंटर कार्निवल की शुरुआत की है। दूसरी बार इसका आयोजन हो रहा है। विंटर कार्निवल से एक दिन पहले शिमला में बर्फबारी से आयोजन में जरूर बाधा आई है। मगर यह प्रदेश वासियों सहित पर्यटकों के लिए सौगात से कम नहीं है। इससे टूरिस्ट की भीड़ और ज्यादा उमड़ने लगी है। लिहाजा शिमला पहुंचने वाले पर्यटक बर्फ के विंटर कार्निनल का आनंद उठा रहे हैं विंटर कार्निवल के दौरान पर्यटक के विभिन्न लजीज व्यंजनों का भी का लुत्फ उठा रहे हैं। रिज पर इसके लिए स्टॉल लगाए गए है।

हिमाचल में बर्फ पर फिसली टूरिस्ट कार, बड़ा हादसा होने से टला

शिमला। हिमाचल प्रदेश के मशहूर पर्यटन स्थल कुफरी में आज एक बड़ा हादसा होने से टल गया। दिल्ली से आए टूरिस्ट की एक गाड़ी बर्फ पर स्किड होने के बाद सड़क किनारे रुकी। गाड़ी का आधे से ज्यादा हिस्सा सड़क से बाहर हो चुका था। गनीमत यह रही कि गाड़ी सड़क से नीचे पलटी। सूचना के अनुसार, इस गाड़ी में पांच टूरिस्ट सवाल थे, जो कि दिल्ली से घूमने के लिए आए थे। जिस जगह गाड़ी रुकी, यदि वहां से गाड़ी नीचे पलट जाती तो यह करीब 300 मीटर गहरी खाई में रुकती। इससे बड़ा हादसा हो सकता था। सभी यात्री सुरक्षित बताए जा रहे हैं। बताया जा रहा है कि दिल्ली नंबर की गाड़ी ठियोग साइड से शिमला की तरफ जा रही थी।

अभी आंदोलन से दूर रहेगा संयुक्त किसान मोर्चा

❍ प्रेम भंगू बोले-जनवरी में राष्ट्रपति से करेंगे मुलाकात

पटियाला/संगरूर। संयुक्त किसान मोर्चा शंभू–खनौरी बॉर्डर के आंदोलन में अभी शामिल नहीं होगा। किसान नेताओं की चंडीगढ़ में पौने 4 घंटे तक चली मीटिंग यह फैसला हुआ है। किसान नेताओं का कहना है कि हमारी तरफ से एकता के लिए लगातार प्रयास जारी है। किसानों का कहना है कि हमें अभी एक फोरम से ही चिट्ष्ठी मिली है। किसान नेता प्रेम सिंह भंगू ने कहा कि हम जनवरी के पहले हफ्ते इसी मुद्दे को लेकर देश के राष्ट्रपति या कृषि मंत्री से मुलाकात की जाएगी। आगे भी इस मुद्दे को लेकर मीटिंग की जाएगी। वहीं, उन्होंने पंजाब और केंद्र सरकार के अड़ियल रवैये की निंदा की है। वहीं, डल्लेवाल को आज 4 दिनों बाद खनौरी बॉर्डर पर चल रहे मोर्चे में शीशे के केबिन में लाया गया। उन्होंने सभी राज्यों को एकजुट होने का संदेश दिया। इससे पहले किसान आंदोलन को लेकर पंजाब सीएम भगवंत मान का भी बड़ा बयान आया है। उन्होंने कहा केंद्र को जिद छोड़कर किसानों से बात करनी चाहिए। कबूतर के आंखे बंद करने बिल्ली नहीं भागती है। सीएम ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट एक्स पर लिखा है कि केंद्र सरकार को अपनी पुरानी जिद छोड़कर किसान संगठनों से बातचीत का रास्ता खोलना चाहिए। कबूतर की आंखें बंद करने बिल्ली नहीं भागती है। उन्होंने कहा कि पता नहीं केंद्र सरकार कौन सी तपस्या कर रही है।अगर मोदी जी रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध रुकवा सकते हैं तो क्या वे 200 किलोमीटर दूर बैठे किसानों से बात नहीं कर सकते? आप किस समय का इंतजार कर रहे हैं? इससे पहले भी एक बार लुधियाना में नगर निगम चुनाव में उन्होंने केंद्र सरकार से मांग की थी कि केंद्र को किसानों से बातचीत करनी चाहिए। वहीं, बीजेपी नेता हरजीत सिंह गरेवाल का कहना है कि मुलाकात तो सीएम भगवंत मान ने करवानी है, वह पहल करे।

चार दिनों के बाद आज किसान नेता डल्लेवाल को स्टेज पर लेकर आए हैं।

संक्षिप्त समाचार

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ की तेलंगाना यात्रा, मेडक और हैदराबाद का करेंगे दौरा

नयी दिल्ली। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ बुधवार से तेलंगाना की दो दिवसीय यात्रा पर जाएंगे। उनके कार्यालय ने इस बात की जानकारी दी है। उपराष्ट्रपति सचिवालय के अनुसार, अपनी यात्रा के दौरान धनखड़ मेडक और हैदराबाद का दौरा करेंगे। यात्रा के दौरान उपराष्ट्रपति मेडक जिले के तुनिकी गांव में स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा आयोजित प्राकृतिक एवं जैविक किसान शिखर सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लेंगे। इस शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता भी उपराष्ट्रपति धनखड़ करेंगे। यह सम्मेलन कृषि, जैविक खेती और किसानों के कल्याण से जुड़ी महत्वपूर्ण चर्चा का मंच होगा। उपराष्ट्रपति की इस यात्रा को राज्य में कृषि और जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिहाज से अहम माना जा रहा है।

भोपाल में दो पक्षों में विवाद, पथराव के साथ लहराई गई तलवारें, भारी पुलिस बल तैनात

भोपाल। राजधानी भोपाल के जहांगीराबाद में दो पक्षों में विवाद हो गया। देखते ही देखते स्थिति इतनी बिगड़ी कि दोनों पक्षों में पथराव हो गया, तलवारें लहराई गई। घटना पुरानी गल्ला मंडी की है। दोनों पक्षों के कई लोग गंभीर रूप से घायल हैं। मौके पर भारी पुलिस बल को तैनात करने के बाद मामला शांत हुआ। घायलों को इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया है। सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने मोर्चा संभाला है।दोनों पक्षों में विवाद जहांगीराबाद के पुरानी गल्ला मंडी क्षेत्र में हुआ है। बताया जा रहा है दो दिन पहले दो युवकों के बीच मारपीट हुई थी।जिसमें एक युवक के सीने मे चाकू लग गया था। इस मामले मे पुलिस ने पांच लोगों को आरोपी बनाया था जिसमें से तीन लोग गिरफ्तार हो गये थे। दो लोग फरार चल रहे थे। फरार आरोपी जैसे ही मोहल्ले में आया तो इसी के चलते दोनों पक्षों में फिर विवाद हो गया। दोनों पक्षों ने एक दूसरे पर पथराव किया और बाद में तलवार भी लहराई। पथराव और तलवार लहराए जाने के बाद क्षेत्र में फिलहाल तनाव की स्थिति है। पुलिस द्वारा लोगों से शांति की अपील की गई है।

राजस्थान के कई इलाकों में बारिश, 5 डिग्री तक पहुंचा तापमान

जयपुर। राजस्थान में इन दिनों मौसम में बदलाव देखने को मिल रहा है, जिसमें एक नए पश्चिमी विक्षोभ का असर दिखाई दे रहा है। इसके कारण राज्य के कई हिस्सों में हल्की बारिश हुई है और कड़ाके की सर्दी बढ़ गई है। मौसम विभाग के अनुसार, मंगलवार सुबह तक बीते 24 घंटे में पूर्वी राजस्थान के कुछ इलाकों में हल्की बारिश दर्ज की गई, जबकि पश्चिमी राजस्थान में भी हल्की वर्षा देखी गई। भादरा (हनुमानगढ़) में सबसे अधिक 9 मिलीमीटर बारिश रिकॉर्ड की गई। राज्य के अन्य इलाकों में कोहरा भी देखने को मिला और कई स्थानों पर शीत दिन और अति शीत दिन का माहौल रहा।डूंगरपुर में राज्य का न्यूनतम तापमान 5.0 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो कि काफी ठंडा था। मौसम केंद्र जयपुर के अनुसार, वर्तमान में एक पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय है, जिसके कारण बीकानेर और जयपुर संभाग में बादल छाए हुए हैं और हल्की बारिश हो रही है। अगले कुछ दिनों में यानी 26–27 दिसंबर को एक और नया पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होगा।

ईडी ने दाऊद इब्राहिम के भाई इकबाल कास्कर पर की बड़ी कार्रवाई, जब्त किया ठाणे का फ्लैट

ठाणे। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने भगोड़े गैंगस्टर दाऊद इब्राहिम के भाई इकबाल कास्कर के खिलाफ कार्रवाई करते हुए महाराष्ट्र के ठाणे में 55 लाख रुपये कीमत का एक फ्लैट जब्त किया है। यह फ्लैट ठाणे के पश्चिम इलाके में स्थित नियोपोलिस बिल्डिंग में है। ईडी ने इसे धनशोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलओए) के तहत जब्त किया है। ईडी के मुताबिक यह फ्लैट रियल एस्टेट डेवलपर सुरेश देवीचंद मेहता से जबरन लिया गया था। मेहता अपने साझेदार के साथ बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन का काम करते थे। आरोप है कि इकबाल कास्कर, मुमताज शेख और इसरार अली जमील ने दाऊद इब्राहिम के प्रभाव का इस्तेमाल करते हुए मेहता से यह फ्लैट हथिया लिया। ईडी ने पहले इस फ्लैट को मुमताज एजाज शेख के नाम पर अस्थायी रूप से कुर्क किया था। बाद में पीएमएलए न्यायाधिकरण से अनुमति मिलने के बाद इसे स्थायी रूप से जब्त कर लिया गया। फ्लैट को हाल ही में कब्जे में लिया गया।

कोलकाता रेप-मर्डर, फोरेंसिक रिपोर्ट से आया ट्विस्ट, जिस गद्दे पर ट्रेनी डॉक्टर का शव था, उस पर संघर्ष के सबूत नहीं

कोलकाता। कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल में ट्रेनी डॉक्टर से रेप–मर्डर केस में सेंट्रल फोरेंसिक साइंस लेबोरेट्री (सीएफएसएल) की एक रिपोर्ट सामने आई है। जिसमें कई सनसनीखेज खुलासे हैं। 12 पेज की रिपोर्ट में कहा गया है कि सेमिनार रूम में ऐसा कोई सबूत नहीं मिला, जिससे पता चले कि वहां पीड़ित से रेप के बाद हत्या की गई है। रिपोर्ट के 12वें पेज की आखिरी लाइनों में लिखा है जिस जगह ट्रेनी डॉक्टर का शव मिला था, वहां संघर्ष का कोई सबूत नहीं मिला। जिस गद्दे पर शव था, उस पर भी किसी तरह की हाथापाई के निशान नहीं मिले हैं। इससे अब ये सवाल खड़े हो रहे हैं कि क्या ट्रेनी डॉक्टर का रेप–मर्डर कहीं और हुआ था। गद्दे पर सिर और पेट के नीचे ही खून के निशान मिले थे, इससे अंदाजा लगाया जा रहा है कि शव कहीं और से लाया गया था। 8–9 अगस्त को ट्रेनी डॉक्टर से रेप–मर्डर हुआ था। मामले की जांच सीबीआई कर रही है। मुख्य आरोपी संजय रॉय पुलिस की हिरासत में हैं। एजेंसी 7 अक्टूबर को ही स्पेशल सीबीआई कोर्ट में चार्जशीट दाखिल कर चुकी है।

राहुल गांधी दिल्ली की सब्जी मंडी पहुंचे,कहा- 40 का लहसुन 400 में बिक रहा, जनता महंगाई से परेशान, सरकार कुंभकरण जैसे सो रही

नयी दिल्ली। कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी दिल्ली की सब्जी मंडी पहुंचे। इसका वीडियो उन्होंने मंगलवार सुबह शेयर किया। सब्जी मंडी में राहुल कुछ महिलाओं से बात करते नजर आए। उन्होंने केंद्र की नीतियों की आलोचना की। राहुल ने कहा– लहसुन की कीमत 40 रुपए से 400 रुपए पहुंच गई है। जनता महंगाई से परेशान है। केंद्र सरकार कुंभकरण की नींद सो रही है। राहुल ने आगे कहा आम जनता को अपनी रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने के लिए छोटे–छोटे सामानों पर समझौता करना पड़ रहा है। इस पर राहुल के साथ खड़ी एक महिला ने कहा सोना सस्ता हो गया, लेकिन लहसुन महंगा है।

ठोस उपाय जरूरी

रोजगार की तलाश में गृह राज्य छोड़कर दूसरे राज्यों में पलायन करने की कामगारों की प्रवृत्ति कम होने को सुखद संकेत ही कहा जाना चाहिए। यह सब इसलिए संभव हो पाया है क्योंकि लोगों को रोजगार अब अपने ही प्रदेश में मिलने लगा है। प्रधानमंत्री आर्थिक सलाहकार परिषद की रिपोर्ट में बताया गया है कि पिछले 12 वर्षों में रोजगार के लिए मूल राज्य छोड़कर दूसरे प्रदेशों में जाने के सिलसिले में 12 फीसदी की गिरावट हुई है। इस सुनहरी तस्वीर के बावजूद चिंताजनक पहलू यह भी है कि उत्तर प्रदेश व बिहार जैसे बड़े राज्यों में पलायन की इस समस्या पर काबू नहीं पाया जा सका है। पलायन आमतौर पर ग्रामीण से शहरी इलाकों की तरफ होता आया है। लोग अपने राज्य से बाहर का रुख बेहतर मिलने की उम्मीद में करते हैं। यह कहा जा सकता है कि पलायन रुकने की वजह शिक्षा, स्वास्थ्य व बुनियादी ढांचे में लगातार होते सुधार को माना जाना चाहिए। लेकिन जहां से श्रमशक्ति का पलायन काबू में नहीं हो पा रहा है, वहां स्थानीय स्तर पर लोगों को रोजगार उपलब्ध कराने के साथ–साथ वहां मूलभूत सुविधाएं जुटाने की दिशा में अभी काफी–कुछ करना बाकी है।

बिहार और यूपी जैसे राज्यों में तो हर चुनाव में पलायन की इस समस्या को बड़ा मुद्दा बनाया जाता रहा है। लेकिन सत्ता में आने के बाद राजनेता इस मुद्दे की सुध तक नहीं लेते। बड़ी चिंता इस बात की भी है कि जहां सरकारें स्थानीय स्तर पर रोजगार उपलब्ध कराने का दावा करती हैं, वहां श्रमिकों को मेहनताना इतना नहीं मिल पाता कि वे परिवार का गुजारा कर सकें। ऐसे में उन राज्यों में पलायन करना उनकी मजबूरी हो जाती है जहां श्रमशक्ति की मांग तो हो ही, पर्याप्त मेहनताना भी मिल रहा हो। दूसरी वजह यह भी है कि छोटे उद्योग–धंधों का राज्यों को अपने यहां जिस गति से विकास करना चाहिए, उस गति से काम नहीं हो रहा। इसके लिए सरकारों की नीतियां भी कम जिम्मेदार नहीं है। हमारे देश में घरेलू पलायन की गति धीमी होना संतोष की बात है, लेकिन पलायन के लिए मजबूर करने वालों की सुध नहीं लेना ज्यादा गंभीर है।

हर चुनाव के मौके पर राजनेताओं और राजनीतिक दलों को प्रवासी वोटर्स याद आते हैं। इनका वोट डलवाने के लिए हवाई जहाज तक का बंदोबस्त करने की खबरें आती रही हैं। लेकिन जब वे अपने ही प्रदेश में रोजगार के अवसरों की बात करते हैं तो कोई परवाह नहीं करता। यह समस्या सिर्फ कामगारों तक ही हो, ऐसा नहीं है। शिक्षा की समुचित प्रबंधा नहीं होने के कारण बड़ी संख्या में युवा भी अपना प्रदेश छोडने को मजबूर होते हैं। सरकारों को इस समस्या के समाधान के ठोस बंदोबस्त करने ही होंगे।

अपराधियों का केंद्र

मैपिंग ग्लोबल जियोग्राफी ऑफ साइबर क्राइम विद द वर्ल्ड साइबर क्राइम इंडेक्सश शीर्षक से जारी शोध रिपोर्ट में विशेषज्ञों ने बताया कि कहां साइबर अपराध सबसे ज्यादा हो रहे हैं। इस सूची में 15 देशों के नाम हैं, जिसमें भारत दसवें स्थान पर आया है।वर्धमान ग्रुप के 82 वर्षीय चेयरमैन के साथ हुई घटना ने भारत में बढ़ते साइबर अपराध की ओर ध्यान खींचा है। चेयरमैन एसपी ओसवाल के साथ लगभग 6.9 करोड़ रुपये की ठगी हुई। ठगों ने उन्हें सुप्रीम कोर्ट की नकली ऑनलाइन सुनवाई में बुलाया और जेल भेजने की धमकी देकर उनसे यह रकम ट्रांसफर करवा ली। हालांकि हाल में डिजिटल और ऑनलाइन धोखाधड़ी के अनगिनत मामले सामने आए हैं, लेकिन सुप्रीम कोर्ट की सुनवाई का नाटक कर ठगने की बात पहले कभी नहीं सुनी गई थी।

ऑनलाइन कोर्ट सुनवाई में एक व्यक्ति प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ बन कर पेश हुआ। इसी दौरान उनसे कहा गया कि जांच के हिस्से के रूप में वे 6.9 करोड़ रुपये एक खाते में जमा करा दें। कुछ समय पहले भारत सरकार ने साइबर अपराधों के बारे में चेतावनी जारी की थी। गृह मंत्रालय ने कहा था कि संभव है ऐसी घटनाओं को सीमा पार स्थित आपराधिक गिरोह अंजाम दे रहे हों। एनसीआरबी के मुताबिक 2021 में भारत में साइबर अपराध के 52,974 मामले दर्ज हुए। 2022 में इनमें लगभग 24 फीसदी बढ़ोतरी हुई और कुल 65,893 मामले दर्ज हुए।ब्रिटेन की ऑक्सफॉर्ड यूनिवर्सिटी के समाजशास्त्र विभाग के शोधकर्ताओं ने इसी साल दुनिया का पहला साइबर क्राइम इंडेक्स जारी किया। उसमें भारत को खास जगह मिली। श्मैपिंग ग्लोबल जियोग्राफी ऑफ साइबर क्राइम विद द वर्ल्ड साइबर क्राइम इंडेक्सश्च शीर्षक से जारी शोध रिपोर्ट में विशेषज्ञों ने बताया कि कहां साइबर अपराध सबसे ज्यादा हो रहे हैं। इस सूची में 15 देशों के नाम हैं, जिसमें भारत दसवें स्थान पर आया है।हालांकि केंद्रीय गृह मंत्रालय ने साइबर अपराध की घटनाओं को विदेश से अंजाम दिए जाने का संदेह जताया है, लेकिन ऐसी मीडिया रिपोर्टें हैं, जिनके मुताबिक भारत के कई शहर साइबर अपराधियों का केंद्र बन गए हैं। छोटी–मोटी घटनाएं तो रोजमर्रा के स्तर पर हो रही हैं। असल मुद्दा यह है कि सरकार की साइबर अपराध निरोधक एजेंसियां इन्हें रोकने में कामयाब क्यों नहीं हुई हैं? अगर अपराध का जाल फैला रहेगा, तो कभी–कभार वैसी वारदात भी होना लाजिमी है, जिसके शिकार ओसवाल बने हैं।

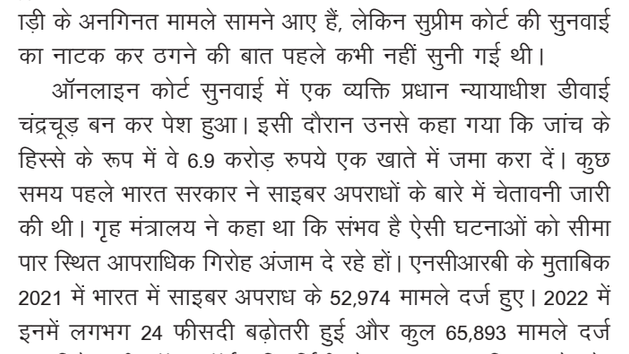

टेंशन लेने का नहीं–देने का

रजनीश कपूर

मुन्ना भाई एमबीबीएसश्च का एक डायलॉग काफी हिट हुआ था जिसमें वो हर किसी को न घबराने की सलाह देते हुए कहते थे टेंशन लेने का नहीं–देने काश्च। एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में काम करने वाली 26 वर्षीय चार्टर्ड अकाउंटेंट ऐना मात्र चार महीने की नौकरी में यह दबाव इतना बढ़ गया कि इस दबाव ने ऐना की जान ले ली।ज् हर युवा व वरिष्ठ कर्मचारी को मुन्ना भाई एमबीबीएसश्च फिछ्ल्म से सीख लेते हुए टेंशन न लेनेश्च की आदत डाल लेनी चाहिए।

संजय दत्त की बहुचर्चित फिछ्ल्म मुन्ना भाई एमबीबीएसश्च का एक डायलॉग काफी हिट हुआ था जिसमें वो हर किसी को न घबराने की सलाह देते हुए कहते थे टेंशन लेने का नहीं–देने काश्च। परंतु शायद उस फिछ्ल्म में दिये गये संदेश को कुछ लोग गंभीरता से नहीं ले सके। इसीलिए वे मामूली से तनाव को इतना बढ़ा लेते हैं कि वह कभी–कभी जानलेवा भी साबित हो जाता है। इस फिछ्ल्म ने कठिन परिस्थितियों को गंभीरता से न लेने की सलाह दी। परंतु आजकल के वर्क प्रेशरश्च व प्रतिस्पर्धा के चलते हर दूसरा व्यक्ति तनाव में दिखाई देता है। इस तनाव का असर न सिफर्द उसकी सेहत पर पढ़ता है बल्कि उसके पारिवारिक जीवन में भी तनाव पैदा हो जाता है।

पिछले दिनों सोशल मीडिया पर पुणे की एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में काम करने वाली 26 वर्षीय चार्टर्ड अकाउंटेंट ऐना सेबेस्टियन की माँ की चिञ्ठी काफी चर्चा में रही। भारत में इस कंपनी के अध्यक्ष को लिखे अपने पत्र में ऐना की माँ ने इस बात का उल्लेख किया कि किस तरह उनकी पुत्री पर कंपनी ने काम का दबाव बनाया हुआ था। मात्र चार महीने की नौकरी में यह दबाव इतना बढ़ गया कि इस दबाव ने ऐना की जान ले ली। इस दबाव का एक स्पष्ट उदाहरण तब भी दिखा जब ऐना के अंतिम संस्कार में कंपनी में काम करने वाले सहकर्मी भी नहीं पहुँचे। जैसे ही ऐना की माँ का यह पत्र सोशल मीडिया पर वायरल हुआ, वैसे ही इस बहुराष्ट्रीय कंपनी में काम कर चुके पूर्व कर्मचारियों ने अपने भयानक अनुभव भी साझा किए। जैसे ही मामले ने तूल पकड़ा वैसे ही कंपनी की ओर से वर्क प्रेशरश्च का खंडन किया गया। इसके साथ ही सरकार ने भी इस मामले में जाँच बैठा दी है।

ऐना की मृत्यु ने आज के कॉर्पोरेट जगत में कई सवाल खड़े कर दिये हैं। इस दुखद घटना के बाद कई तरह की प्रतिक्रियाएँ भी आ रही हैं। दरअसल वर्क प्रेशरश्च के बढ़ते हुए तनाव के कारण दुनिया भर से ऐसे कई उदाहरण सामने आए हैं जहां प्रतिस्पर्धा की दौड़ में आगे रहने के चलते कई लोगों को अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा है। चीन में एक व्यक्ति ने लगातार 104 दिनों तक बिना किसी छुट्टी के काम किया और अंततरू शरीर के कई अंगों की विफलता के कारण उसकी मौत हुई। वहाँ की अदालत ने उस व्यक्ति की कंपनी को उसकी मौत का 20 प्रतिशत तक जिछ्म्मेदार ठहराया। वहीं अमरीका के एक बैंक कर्मचारी की मृत्यु का कारण भी उसके काम का दबाव ही बना। ऐसे अनेकों उदाहरण हैं जहां कर्मचारियों से अधिक काम करवाने के चलते ऐसे हादसे हो रहे हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के आँकड़ों के अनुसार दुनिया भर में काम के दबाव व तनाव के चलते प्रतिवर्ष करीब 7.50 लाख लोगों की मृत्यु होती है। ऐसा इसलिए होता है कि अधिक काम करने का सीधा प्रभाव आपकी सेहत पर पड़ता है। काम का तनाव लेने से मनुष्य में ह्रदय रोग, डायबिटीज व स्ट्रोक जैसी घातक बीमारियों की संभावना बढ़ जाती है। इतना ही नहीं आज के सूचना प्रौद्योगिकी के दौर में जब हम घंटों कंप्यूटर के सामने बैठ कर काम करते हैं तो हमारे जोड़ो में जकडन, कमर में दर्द, सरदर्द, आँखों में थकान, जैसे प्रारंभिक लक्षण भी दिखाई देते हैं। तनाव के चलते हमारे शरीर में ऐसे रसायन पैदा हो जाते हैं जो रक्तचाप और कोलेस्ट्रॉल को भी बढ़ा देते हैं। इसलिए हम चिड़चिड़े भी हो जाते हैं।

तनाव के चलते जब गाड़ी चलाकर हम अपने दफ्तर से घर या घर से दफ्तर जा रहे होते हैं तो ऐसे में दुर्घटना होने की संभावना भी बढ़ जाती है। मोबाइल फोन और ईमेल के चलते हम हर समय अपने काम से जुड़े रहते हैं इसलिए हमें काम से आराम नहीं मिल पाता। ऐसे तनाव का सीधा अनुभव आपको उस समय होता होगा जब आपके मोबाइल पर आपके बॉस का फोन बजता होगा। आप यदि अपने घर पर हों और परिवार के साथ समय बिता रहे हों, तभी आपके बॉस का फोन बजे तो आपके चेहरे पर एक अजीब से तनाव की झलक मिल जाती है। ऐसे में पारिवारिक सुख को भी झटका लगता है।

जानकारों के अनुसार, सप्ताह में 55 घंटे या उससे अधिक काम करने वालों में तनाव बढने की संभावना अधिक होती है। यह तनाव अन्य बीमारियों को बढ़ावा देता है। परंतु इसका मतलब यह नहीं है कि आपको कामयाब होने के लिए कम मेहनत करनी चाहिए। बिना मेहनत के किसी को कामयाबी नहीं मिलती। इसलिए हमें परिश्रम और अतिश्रम के बीच एक को चुनना चाहिए। परिश्रम किया जाए तो एक सीमा के तहत ही किया जाए। आपको अपने शरीर की क्षमता अनुसार ही काम करना चाहिए। समय–समय पर अपने स्वास्थ्य की जाँच भी करवाते रहना चाहिए। इसके साथ ही नियमित रूप से तनाव–मुक्ति के कई साधन, जैसे योगा, ध्यान, भजन, मनोरंजन आदि का भी सहारा लेना चाहिए।

वहीं अगर इम्प्लॉयर की बात करें तो उन्हें भी अपने लक्ष्य की पूर्ति के चलते कर्मचारियों पर दबाव बनाना पड़ता है। परंतु यह दबाव भी एक सीमा तक ही दिया जाए।

आज हमारे समाज को काम और आराम के बीच एक संतुलन बनाने की जरूरत है। वरना ऐना सेबेस्टियन जैसे कई और होनहार कर्मचारियों को अपने जीवन से हाथ धोना पड़ेगा। आजकल के युवा भी जल्द कामयाबी पाने के चक्कर में काम और आराम में संतुलन नहीं बना रहे हैं। इसका सीधा असर उनके स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। इसलिए हर युवा व वरिष्ठ कर्मचारी को मुन्ना भाई एमबीबीएसश्च फिछ्ल्म से सीख लेते हुए टेंशन न लेनेश्च की आदत डाल लेनी चाहिए।

अनुभूत समाज की भावशक्ति पाता है

हृदयनारायण दीक्षित

इतिहास भूत होता है। इसमें जोड़ घटाव उचित नहीं होता। हम चाहकर भी भूतकाल नहीं बदल सकते। लेकिन भूत इतिहास बनता है। अनुभूत समाज की भावशक्ति पाता है। वह काव्य बनता है, ऋचा या मंत्र बनता है। वह इतिहास में हस्तक्षेप नहीं करता। वह इतिहास को सौन्दर्य देता है। इतिहास और सुंदरता में प्रत्यक्ष सम्बंध नहीं होते। सुंदरता की अनुभूति का स्रोत भावशक्ति है। इतिहास का स्रोत भूत–सत्य है। श्रीकृष्ण इतिहास के महानायक हैं। उन्हें भारत की भावशक्ति मिली। वे गीत बने, काव्य बने। उनका चलना फिरना भी गीत नृत्य हो गया। उनके कारण यमुना प्यार की

नदी हो गई। उनकी बांसुरी के सुर, राग, लय ने इतिहास को मनोरम बनाया। उनका शिशुकाल भी गीत भजन और स्मरणीय काव्य बना। मथुरा–वृन्दावन भारतीय भूगोल का भाग है। श्रीकृष्ण के जीवन की ऐतिहासिक घटनाओं के भी साक्ष्य हैं लेकिन इससे भी ज्यादा वे भारतीय भावशक्ति के 'मिथक' हैं।

इतिहास लौकिक होता है। लोकभाव की शक्ति अपने प्रिय को लोक के परे भी देखती है। जैसे प्रत्यक्ष को प्रमाण की जरूरत नहीं पड़ती, वैसे ही प्रेमपूर्ण चित्त को प्रमाण बेकार लगते हैं। हम इतिहास की पोथी पढ़कर राधाकृष्ण का प्रेमतत्व नहीं जान सकते। प्रेममय चित्त बड़ी सरलता से लौकिक को अलौकिक बनाते हैं। वे इस जीवन के बाद भी प्रेमी बने रहने का संकल्प लिया करते हैं। प्रेम और इतिहास में कोई दुश्मनी नहीं। प्रेम गीतों में भी इतिहास हो सकता है और इतिहास में भी प्रेम के कथानक। प्रेमी आकाश में उड़ते, तमाम जन्मों में मिलते बिछुड़ते गाए जाते हैं। वे स्थूल से सूक्ष्म की यात्रा पर होते हैं। ऐसे प्रेमी इतिहास के चरित्र भी हो सकते हैं लेकिन इतिहास उन्हें आकाशचारी नहीं दर्ज करता। श्रीकृष्ण इतिहास में है, भाव में हैं। प्रेम में है। वे प्रेम रस का परम चरम है। तैत्तिरीय उपनिषद् के ऋषि ने संपूर्णता या ब्रह्म को 'रस–रसो वै सः' गाया है। वैसे ही रस या महारस हैं श्रीकृष्ण। वे स्वयं महारस भी हैं और उस रस का आनंद लेने वाले रसिक बिहारी भी हैं। वे ज्ञाता हैं, ज्ञेय हैं और ज्ञान भी हैं। प्रकृति सृजन का चरम परम है लेकिन जिस प्रकृति ने उन्हें रचा है, वह प्रकृति भी उन्हीं के मार्गदर्शन में चलती है।

राधाकृष्ण का प्रेम लौकिक है। अध्यात्म भी है। यहां दो हैं राधा और कृष्ण। राधा होना चाहती है कृष्ण। बिना कृष्ण हुए राधा का प्यार आधा है। इस प्यार को पकने पकाने के लिए श्रीकृष्ण की आंच और ऊष्मा चाहिए। श्रीकृष्ण की प्रीति ऊष्मा भी सहज नहीं। राधा यह बात जानती ही रही होगी कि वे मिलें हमसे और मैं राधा न रहूं। श्रीकृष्ण से मिलूं और श्रीकृष्ण ही हो जाऊं। श्रीकृष्ण तो सबकुछ जानते ही थे। राधा सामान्य नायिका नहीं है। वे धारा के विपरीत हैं। धारा शब्द को उलटने से ही शब्द राधा बनता है। राधा का संस्पर्श भी श्रीकृष्ण को श्रीकृष्ण नहीं रहने देगा। अग्नि आंच दो तरफा है। दोनो की आंच के कारण दोनो का अलग अस्तित्व बचना मुश्किल। लेकिन राधा तैयार है। उन्हें निजी अस्तित्व की चिंता नहीं। राधा मिली श्रीकृष्ण से और श्रीकृष्ण मिले राधा से। वे दो थे। एक हो गए। फिर एक भी नहीं बचा। अद्वैत घटित हो गया। पुराणकार लिख सकते थे कि तब देवताओं ने इस महामिलन पर आकाश से फूल बरसाए। लेकिन राधा माधव की प्रीति के लिए देवों की पुष्पवर्षा की जरूरत हीं नहीं थी। इस प्रीति को देखकर मथुरा–वृंदावन और बरसाना के फूल स्वयं ही लहके। उनकी सुगंधा आज भी अनुभव की जा सकती है।

सोचता हूं कि तब आकाश में बिना बादल ही 'घनश्याम' आ गए होंगे। ऋत सत्य ने गति दी होगी। राधाकृष्ण प्यार की ऊष्मा के जलकण आकाश पहुंचे होंगे। इस महाप्रीति से पर्जन्य ने कृति आकार लिया होगा। ये पर्जन्य और कोई नहीं हम सबके प्रिय घनश्याम ही हैं। गीता में उन्होंने स्वयं को 12 मासों के चक्र में अगहन–मार्गशीर्ष बताया है। उसके अपने कारण हैं। उनका जन्म कड़कते बादलों के समय हुआ। उस मुहूर्त में सब तरफ पर्जन्य घनश्याम थे। धरती तक उतर आए थे वे। यमुना भावविह्वल होकर उमड़ पड़ीं थी तब। इतिहासकार की सीमा है। पर्जन्य इतिहास का उपकरण नहीं हैं। बांके बिहारी की छवि मस्तिष्क की समृद्धि नहीं है। मोर मुकुट का प्राकृतिक सौन्दर्य इतिहास की विषय वस्तु नहीं है। माखन चोरी की प्रथम सूचना रिपोर्ट किसी थाने का अभिलेख नहीं है। गोपियों के बीच नृत्य और रास का वीडियो वायरल नहीं हुआ। प्रेम उल्लास नापने का कोई यंत्र न उस समय था और न ही अब तक बन पाया है। भाव जगत् निस्संदेह इसी प्रत्यक्ष जगत् का हिस्सा है लेकिन यह जगत प्रत्यक्ष है। सो इस भूत की स्मृति है। स्मृति का इतिहास है।

भावजगत् का इतिहास लिखें तो कैसे लिखें?भारत का मन श्रीकृष्ण में आनंदरस पाता है। आनंदरस की प्यास कभी तृप्त नहीं होती। जितना पीते हैं, उतना ही यह प्यास और ज्यादा बढ़ती है। प्रेम तृत्प नहीं होता। न मिलने से और न ही दूर रहने में। जो तृप्ति दे वह प्रेम नहीं हो सकता। श्रीकृष्ण प्रेम अवतार है। उनके भजन, कीर्तन, लीला और नाटक हम सबकी तृप्ति और बढ़ाते हैं। अनंत अनंत होता है। तृप्ति का अंत नहीं होता। श्रीकृष्ण अनंत हैं। उनकी कथा अनंत है। हरि अनंत हरि कथा अनंता। थोड़ा इतिहास की शरण लें। तब बौद्ध पंथ भारत को आच्छादित कर रहा था। संभवतः दो क्षेत्रों में इसका प्रभाव नहीं पड़ा। पहला क्षेत्र वृंदावन था और दूसरा काशी। बुद्ध के अनुसार यह संसार दुखमय लेकिन वृंदावन में यह संसार नृत्यपूर्ण था। नृत्य में दुख की जगह कहां होती है? रास अपने आपमें आनंद है। उन्हें कैवल्य की जरूरत ही नहीं। उद्धव को गोपियों ने यही उत्तर दिया था। हमारा सब कुछ श्याम के संग और रंग में है। हम निर्गुण अद्वैत का क्या करें? अद्वैत में वे भी थीं पर इस अद्वैत में इन्द्रधनुष था। श्रीकृष्ण की प्रीति के रंगों में रचा बसा था यह अद्वैत।

वामपंथी मित्र कहते हैं कि श्रीकृष्ण काव्य कल्पना हैं। इतिहास के पात्र नहीं। हम कहते हैं कि मथुरा इतिहास है, यमुना इतिहास है। गोवर्द्धन इतिहास है। नन्दगांव इतिहास है। कुरू क्षेत्र इतिहास है। युद्ध इतिहास है। हस्तिनापुर अभी भी है। यह भौगोलिक क्षेत्र है। सो है। इसलिए इतिहास है। श्रीकृष्ण प्रत्यक्ष नहीं हैं, क्योंकि वे इतिहास हैं। वे हमारी नस नस में हैं।

हमारे अन्तःकरण में उनकी बांसुरी बजती है। यह हमारा अंतःकरण है। डॉ0 लोहिया ने इसी अंतः क्षेत्र की बात की थी कि श्रीकृष्ण को इतिहास के पर्दे पर उतारने की कोशिश न करना। हम सादर जोड़ते हैं कि इतिहास का पर्दा छोटा है।

प्रेमगली संकरी है। इससे होकर प्रेम ही गुजर सकता है। दो नहीं निकल सकते। इतिहास के पास श्रीकृष्ण को समेटकर रखने की जगह नहीं। श्रीकृष्ण प्रेम हैं। महाप्रेम के इस महानायक को इतिहास के साथ अपने ह्रदय में भी खोजना चाहिए। साधारण मुद्रा में नहीं, नाचते हुए। श्रीकृष्ण सतत् नाचते हुए पूर्वज हैं। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर बधाई।

डीएम एवं एसपी ने सुनी शिकायतें, ०४ मामले का मौके पर हुआ निस्तारण

''सुशासन सप्ताह, प्रशासन गांव की ओर'' कार्यक्रम के तहत पांचों तहसीलों में सम्पूर्ण समाधान का किया गया आयोजन

प्रतापगढ़। ''सुशासन सप्ताह, प्रशासन गांव की ओर'' कार्यक्रम के तहत शासन के निर्देशानुसार जन सामान्य की शिकायतों के त्वरित निस्तारण के उद्देश्य से जनपद के पांचों तहसीलों क्रमशः कुण्डा, लालगंज, रानीगंज, पट्टी एवं सदर में सम्पूर्ण समाधान का आयोजन किया गया जिसमें शिकायतकर्ताओं की शिकायतों को सुना गया एवं शिकायतों के निराकरण हेतु अधिकारियों को निर्देशित किया गया।

➤ **राजस्व और पुलिस की टीम मौके पर जाकर राजस्व शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण ढंग करायें–जिलाधिकारी**

इसी क्रम में जिलाधिकारी संजीव रंजन की अध्यक्षता में तहसील कुण्डा में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। कुण्डा तहसील सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 246 फरियादी अपनी समस्याओं के निस्तारण हेतु उपस्थित हुये जिनमें से 04 शिकायत इस प्रकृति की पायी गयी जिनका मौके पर निस्तारण कर दिया गया। सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल प्राप्त 246 शिकायतों में से 170 शिकायतें राजस्व विभाग से, पुलिस विभाग से 30, विकास विभाग से 17, समाज कल्याण विभाग से 05, स्वास्थ्य विभाग से 02 एवं 22 अन्य विभागों से सम्बन्धित शिकायते प्राप्त हुई। पुलिस विभाग से सम्बन्धित शिकायतों को पुलिस अधीक्षक डा0 अनिल कुमार एवं विकास विभाग से सम्बन्धित शिकायतों को मुख्य विकास अधिकारी डा0 दिव्या मिश्रा द्वारा सुनी गयी।

सम्पूर्ण समाधान दिवस में शिकायतकर्ता रेनू यादव निवासी साकिन

चौरही (डिहवा) ने शिकायत किया कि विपक्षीगण हरिश्चन्द्र, मोहनलाल, आशा देवी द्वारा प्रार्थिनी के सहन दरवाजे की भूमि पर जबरन बांस, बल्ली व टिनशेड डालकर अवरोधित कर दिया गया है तथा पूर्वजीय रास्ता पूर्णतयः अवरोधक हो गया है, अवरोधक रास्ता को खुलवाया जाये, इस प्रकरण पर जिलाधिकारी ने एसओ मानिकपुर को निर्देशित किया कि उचित कार्यवाही कर शिकायत का निस्तारण करायें। शिकायतकर्ता अमरनाथ सरोज निवासी रायकाशीपुर ने शिकायत किया कि ग्राम नेवादाकला के उमेश यादव, दीपक भारती, सूरज भारती एवं रोहित द्वारा मेरी जमीन पर अवैध रूप से कब्जा कर लिया गया है, इस प्रकरण पर जिलाधिकारी ने उपजिलाधिकारी कुण्डा व एसओ संग्रामगढ़ को निर्देशित किया है कि जांच कर उचित कार्यवाही करते हुये शिकायत का निस्तारण करायें।

जिलाधिकारी ने जन शिकायतों को गम्भीरता पूर्वक सुनकर अधिकारियों को स्पष्ट रूप से निर्देशित किया कि शासन की मंशा अनुरूप शिकायतों का निस्तारण प्राथमिकता के आधार पर गुणवत्तापूर्ण ढंग से किया जाये, अन्यथा की स्थिति में सम्बन्धित के विरूद्ध कार्रवाई की जायेगी। उन्होने निर्देशित करते हुये कहा कि सम्पूर्ण समाधान दिवस में आये जमीनी विवादों के शिकायतों को राजस्व और पुलिस टीम द्वारा मौके पर जाकर बिना किसी पक्षपात के उन शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण ढंग से किया जाये। उन्होने उपस्थित अधिकारियों से कहा कि वह अपने अधीनस्थों पर निर्भर न रहें बल्कि स्वयं निस्तारण की गुणवत्ता को देखें। सम्पूर्ण समाधान दिवस में जिलाधिकारी ने सभी विभागीय अधिकारियों को सख्त निर्देश दिये कि कार्यो में ढिलाई कदापि न बरती जाये, कोई भी गरीब व्यक्ति किसी कल्याणकारी योजनाओं से वंचित न रहने पाये। उन्होने अधिकारियों को निर्देशित किया कि शिकायतों के निस्तारण में किसी भी स्तर पर शिथिलता या लापरवाही को बहुत ही गम्भीरता के साथ लिया जायेगा, इसलिये सभी अधिकारीगण शासन की मंशा के अनुरूप सम्पूर्ण समाधान दिवस में प्राप्त शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण एवं त्वरित गति से किया जाये। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक डा0 अनिल कुमार ने समस्त थानाध्यक्षों को निर्देशित किया कि सम्पूर्ण समाधान में पुलिस विभाग से सम्बन्धित प्राप्त शिकायतों का निस्तारण समय–सीमा के अन्दर किया जाना सुनिश्चित करें। उन्होने पुलिस अधिकारियों/थानाध्यक्षकों को निर्देश दिया कि जो भी शिकायकर्ता अपनी शिकायत लेकर आयें उनकी शिकायतों को विनम्रता पूर्वक सुने, प्रत्येक मामले में मौके पर जाकर निष्पक्ष जांच करें और प्रत्येक दशा में पीड़ित को न्याय मिले। इस अवसर पर उपजिलाधिकारी कुण्डा भरतराम यादव, तहसीलदार सहित जनपद स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

नवजात बच्ची को बेचने वाला पिता बंदी

चित्रकूट । थाना मारकुण्ड़ी पुलिस टीम ने नवजात बच्ची को बेचने वाले पिता को 10 हजार रुपये के साथ गिरफ्तार किया है।गौरतलब हो कि 11 अक्टूबर को सुनील कुमार बसोर पुत्र नत्थू प्रसाद निवासी डोडामाफी ने नवजात पुत्री के अपहरण की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। इस पर एसओजी एवं थाना मारकुण्डी पुलिस ने घटना का खुलाशा करते हुये पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया था। घटना में तथ्य प्रकाश में आये थे कि पिता सुनील कुमार बसोर ने ही बच्ची को 10 हजार रुपए में बेंचा था। नवजात बच्ची की बरामदगी एवं खरीद फरोख्त की बात प्रकाश में आने के आधार पर मुकदमा में धारा 81, 84, 87 जेजे एक्ट की बढोत्तरी की गयी। बुधवार को एसआई अरविन्द कुमार सिंह ने टीम के साथ बच्ची के पिता सुनील कुमार को गिरफ्तार किया। कब्जे से बच्ची को बेंचने में प्राप्त 10 हजार रुपये बरामद किये गये हैं।

अर्थदंड की सजा

चित्रकूट। सड़क दुर्घटना कर नुकसान पहुंचाने वाले अभियुक्त को न्यायालय ने तीन हजार रुपये के अर्थदण्ड से दण्डित किया है। अभियोजन अधिकारी पीयूष कुमार यादव ने बताया कि सिविल जज (सीडि) सचिन कुमार दीक्षित ने कोतवाली में पंजीकृत मुकदमें में दोष सिद्ध होने पर आरोपी धरमू पुत्र शिवऔतार भारद्वाज निवासी अकबरपुर को तीन हजार रुपए अर्थदण्ड की सजा सुनाई है।

कच्ची शराब बरामद

चित्रकूट। राजापुर थाना के एसआई कन्हैयाबक्श सिंह ने टीम के साथ राजेन्द्र कुमार पुत्र रामनारायण निवासी बरुआ को 10 लीटर कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार किया है।

बिजली कटौती को लेकर कटका क्लब ने सुल्तानपुर एसडीएम को ज्ञापन सौंपा

सुल्तानपुर(आरएनएस)। सुल्तानपुर जिले में ग्रामीण क्षेत्रों में असमय विद्युत कटौती से विद्यार्थियों के अध्ययन में उत्पन्न हो रही बाधा के कारण सुल्तानपुर एस डी एम सदर विपिन द्विवेदी को ज्ञापन कटका क्लब सामाजिक संस्था के द्वारा सौंपा गया। कार्यक्रम का नेतृत्व संस्था अध्यक्ष सौरभ मिश्र विनम्र ने किया। इस मौके पर उपस्थित संस्था अध्यक्ष सौरभ मिश्र विनम्र ने बताया कि हाईस्कूल और इण्टरमीडिएट की बोर्ड परीक्षा के दिन निकट हैं। छात्र परीक्षा की तैयारी में लगे हुए हैं। दिसम्बर अर्थात सर्दी के महीने में घर के कमरों में सुबह सात बजे के बाद ही पढ़ने–लिखने के लिए विद्यार्थियों को प्रर्याप्त प्राकृतिक प्रकाश मिल पाता है। विद्युत विभाग द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में सुबह पांच बजे के आस–पास बिजली काट दी जा रही है। जिससे विद्यार्थियों को पढ़ने में दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है । इस मौके महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष नफीसा खातून ने बताया कि बोर्ड परीक्षा के इस पीक टाइम में बिजली कट जाने के बाद विद्यार्थियों कों अध्ययन में बड़ी असुविधा हो रही है। सर्दी के दिनों में सुबह पांच बजे कमरे और कमरे के बाहर अंधेरा रहता है। छः बजे के बाद कमरे बाहर कुछ प्रकाश संभव होता है। सर्दी के महीने में सुबह कमरे के बाहर बैठ कर पढ़ने से विद्यार्थियों को ठंड लग सकती है जिससे वे बीमार भी पड़ध सकते हैं। वहीं राष्ट्रीय सर्व समाज आर्मी के प्रदेश प्रभारी सरफराज ने कहा कि विद्युत विभाग को सुबह पांच बजे से सात बजे तक विद्युत कटौती रोकने के लिए निर्देशित करें नहीं तो संस्था जल्द आन्दोलन करेगी ।

खेल लीग प्रतियोगिता का किया गया आयोजन

प्रतापगढ़। युवा कल्याण एवं प्रान्तीय रक्षक दल विभाग द्वारा आयोजित ब्लाक स्तरीय उत्तर प्रदेश ग्रामीण खेल लीग प्रतियोगिता का आयोजन जूनियर हाईस्कूल बझान के खेल मैदान में किया गया जिसमें एथलेटिक्स, बालीबॉल, बैटमिन्टन की प्रतियोगिता करायी गयी। बालक वर्ग के 100 मीटर दौड़ अनुराग सरोज प्रथम, प्रशान्त यादव द्वितीय, बालिका वर्ग के दौड़ में न्रमता सिंह प्रथम, अंशिका धुरिया द्वितीय, बालक वर्ग के 800 मीटर दौड़ में दौड़ अमर सिंह पासवान प्रथम, सुधांशू सिंह द्वितीय तथा बालिका वर्ग दौड़ में नम्रता सिंह प्रथम, साक्षी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। जैवलिन बालक वर्ग में अनुराग सरोज प्रथम, विशाल वर्मा–द्वितीय, बालिका वर्ग में किरन प्रथम, बसुधा द्वितीय, बालीबॉल बालक वर्ग में यूपीएस गड़वारा प्रथम रहा। बैडमिन्टन बालक वर्ग में आर्यन प्रथम व बालिका वर्ग में निशबा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। डिस्कस बालक वर्ग प्रतियोगिता में आयुशमान सिंह प्रथम व बालिका वर्ग में पायल सरोज ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। विजयी प्रतिभागियों को पुरूस्कार एवं प्रमाण–पत्र का वितरण भीम सिंह प्रधान संघ अध्यक्ष सण्डवाचन्द्रिका व प्रधानाचार्य जूनियर हाईस्कूल बझान के करकमलों द्वारा किया गया।

प्रतियोगिता का संचालन सुमित सिंह पाल द्वारा किया गया। कार्यक्रम में रमाशंकर वर्मा, अभय प्रताप वर्मा, रामलौट, धीरज आदि सभी उपस्थित रहे। यह जानकारी प्रभारी जिला युवा कल्याण एवं प्रा0वि0द0 अधिकारी सुमित सिंह पाल द्वारा दी गयी है।

स्पॉन्सरशिप योजना में लाभान्वित होगें लाभार्थी

जौनपुर (आरएनएस)। असहाय बच्चों के लिए जिला प्रोबेशन विभाग की तरफ से स्पॉन्सरशिप योजना के तहत जिले के 271 लाभार्थियों की लिस्ट फाइनल कर दी गई है। एक माता–पिता के अधिकतम दो बच्चों को इसका लाभ दिया जाएगा। इसमें माता–पिता में से एक की भी मौत होने पर लाभ मिलेगा। पूर्व में भी 62 बच्चों को इसका लाभ दिया जा रहा है। शासन की तरफ से अनाथ और एक अभिभावक की मौत के बाद बच्चों को स्पॉन्सरशिप योजना के तहत प्रतिमाह चार हजार रुपये की आर्थिक सहायता दी जा रही है। इसके तहत एक माता–पिता के अधिकतम दो बच्चों को यह लाभ दिया जाएगा। अब तक ऐसे बच्चों को मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना से लाभान्वित किया जा रहा है। स्पॉन्सरशिप योजना में दायरा बढ़ा दिया गया है। इसमें गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले एवं 72 हजार से कम वार्षिक आय वाले परिवारों को भी सहायता दी जा रही है। पूर्व में कुल 62 बच्चों को इसकी आर्थिक सहायता दी जा रही है। एसडीएम सदर के क्षेत्र में 30, बदलापुर में 21, बक्शा में 21, बरसठी में 4, धर्मापुर में 7, जलालपुर में 10, करंजाकला में 10, केराकत में 6, खुटहन में 11, महराजगंज में 12, मड़ियाहूं में 16, मुफ्तीगंज में 4, मुंगराबादशाहपुर में 18, रामनगर में 16, रामपुर में 5, शाहगंज में 4, सिकरारा में 29, सिरकोनी में 11, सइथाकला में 21, सुजानगंज में 17 छात्रों को इसका लाभ दिया गया।

कंबल वितरित किया वनवासियों को

जौनपुर (आरएनएस)। इस समय कोहरा और गलन की वजह से पड़ रही भीषण ठंड के मौसम में वनवासी, वृद्ध, दिव्यांग, विधवा बेसहारा लोगों को सहारा देने हेतु प्रथम चरण में भारत विकास परिषद द्वारा अध्यक्ष दिलीप जायसवाल के नेतृत्व में वनवासी सहायता प्रकल्प के अंतर्गत आदिवासी बस्ती रामपुर निकट बरईपार, ग्राम सभा इस्माइला, बदलापुर तहसील के ग्राम सभा दुधौड़ा में कंबल वितरण किया। अध्यक्ष ने कहा कि बहुत ही सौभाग्य की बात है कि आज हम सबको इन समाज के सबसे निचले वर्ग के लोगो की सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ है। पूर्व अध्यक्ष भृगुनाथ पाठक ने कहा कि इस भीषड़ ठंड के मौसम में मानवता की सेवा करना जीवन का सर्वोच्च कर्म है। पूर्व अध्यक्ष शिव कुमार गुप्ता ने कहा कि भारत विकास परिषद अपने स्थापना कॉल से ही सेवा कार्य करती आ रही है परिषद का मुख्य उद्देश्य ही असहाय और वंचित लोगो की सेवा करना है। मनोज यादव ने कहा कि वनवासियों एव असहायो की सेवा के लिए आज गांव में परिषद द्वारा कंबल वितरण किया जाना बहुत ही पुनीत कार्य है। शहर से इतनी दूर आकर इस गांव में कार्यक्रम करने के लिए अध्यक्ष और पूरी टीम को धन्यवाद दिया। ईश्वरचंद मौर्या, संतोष अग्रहरी, शरद साहू, डॉ दिवाकर गुप्ता, ध्रुव जायसवाल, संजय साहू, आशुतोष पाठक सहित संस्था के तमाम सदस्य और ग्रामवासी उपस्थित थे।

इलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट कोआपरेटिव बैंक लिमिटेड इलाहाबाद जनपद प्रयागराज में नवगठित बहुउद्देशीय सरकारी समिति का

केन्द्रीय गृह एवं साहकारिता मंत्री श्री अमित शाह द्वारा सहकार समृद्ध के अन्तर्गत देश के नवगठित बहुउद्देशीय पैक्स डेयरी व मत्स्य सहकारी समितियों का शुभारंभ दिनांक 25ध12ध2024 को नई दिल्ली में किया गया है जिसकी लाइव स्ट्रमिगं इलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट बैंक लिमिटेड इलाहाबाद मुख्यालय में की कई गयी उक्त कार्यक्रम में विशिष्ट आतिथि उपेन्द्र सिंह मा0 संचालक युपीसीबी लखनऊ कार्यक्रम के अध्यक्ष शिवमोहन मौर्य सभापति इलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट कोआपरेटिव बैंक लिमिटेड इलाहाबाद जनपद प्रयागराज कौशाम्बी विनोद कुमार सिंह उप आयुक्त एवं उप निबंधक साहकारिता प्रयागराज मंडल जनपद प्रयागराज अनिल शर्मा जिला विकास प्रबंधक नाबार्ड एवं बैंक के सचिव मुख्य कार्यपालक अधिकारी ओमवीर सिंह ने अयोजित सहकार से समृद्ध तक कार्यक्रम मे भाग लिया कार्यक्रम मे नवगठित समितियो को प्रमाण पत्र एवं बैंक शाखाओ के मध्यम से घ्ण वितरण भी किया गया उपेन्द्र सिंह संचालक यूपीसीबी ने कहा कि देश मे एक भी पंचायत ऐसी नहीं होगी जहां पैक्स डेयरी या मत्स्य सहकारी समिति ना हो।।

उप आयुक्त एवं उप निबंधक सहकारिता प्रयागराज मंडल ने कहा कि पिछले तीन वर्षो मे लगभग 60 पहल की गई है वह सहकारी श्रेत्र को और अधिक व्यापक बनाने मे महत्वपूर्ण योगदान देगी बैंक अध्यक्ष शिवमोहन मौर्या जी ने बताया सहकार समृद्ध के उद्देश्यो को विस्तार से बताया बैंक की आर्थिक एवं वित्तीय स्थिति के बारे में मोहम्मद विलाल अनुभाग अधिकारी द्वारा बताया गया बैंक अध्यक्ष शिवमोहन मौर्या जी ने कहा की दो लाख प्राथमिक सहकारी समितियां पंजीकृत होते ही देश मे एक भी पंचायत ऐसी नही होगी जहां पैक्स डेयरी या मत्स्य सहकारी समिति ना हो उन्होंने कहा कि ऐसा होते ही पूरे देश मे सहकारिता की पहुँच हो सकेगी जिससे तहसील और जिले की सांस्थाऐं बनेगीं और राज्य की संस्थाओ को भी नई ताकत और गति मिलेगी बैंक सचिव द्वारा समस्त आंगतुको का पुष्प गुच्छ देकर सम्मान किया संचालन मंडलीय अधिकारी डा0 सीएल त्रिपाठी एवं अनुभाग अधिकारी मो0 बिलाल द्वारा किया गया कार्यक्रम मे जनपद एवं मंडल के समस्त कर्मचारी कार्यक्रम मे कृष्ण कुमार दीपक अग्रवाल मनोज कुमार सिंह महेंद्र कुशवाहा उपस्थित रहे ।।।।रिपोर्ट नसीम राईन मूरतगंज

संक्षेप

राष्ट्रीय सर्वेक्षण के लिए दिया प्रशिक्षण

चित्रकूट(आरएनएस)। डायट शिवरामपुर में परख राष्ट्रीय सर्वेक्षण के लिए समस्त एफआई को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षण के उपरान्त शैम्पलिंग, एटी, पीक्यू, टीक्यू, एसक्यू का अभ्यास कराया गया। तत्पश्चात मास्टर ट्रेनर सौरभ चन्द्र सविता द्वारा फील्ड इन्वेस्टिगेटर्स के अभ्यास पत्रकों का निरीक्षण किया गया। साथ ही मास्टर ट्रेनर हेम सिंह और राबिया खातून ने प्रशिक्षण में अपेक्षित सहयोग प्रदान किया। उप शिक्षा निदेशक डा. आदर्श कुमार त्रिपाठी ने 4 दिसम्बर को आयोजित होने वाले सर्वे को पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी से नकलविहीन कराने के लिए समस्त फील्ड इन्वेस्टीगेटर्स को निर्देशित किया गया। प्रशिक्षण में समस्त डायट प्रवक्ता उपस्थित रहे।

आयोग की सदस्य का आगमन

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की सदस्य गीता विश्वकर्मा द्वारा लोक निर्माण विभाग के निरीक्षण गृह (गेस्ट हाउस) प्रतापगढ़ में जनसुनवाई कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। इस कार्यक्रम में महिला उत्पीड़न की रोकथाम एवं पीड़ित महिलाओं को त्वरित न्याय दिलाए जाने हेतु उनकी समस्याओं को सुना जाएगा। जनसुनवाई कार्यक्रम पूर्वान्ह 11 बजे से शुरू होगा और इसमें महिलाओं को उनकी समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए आवश्यक निर्देश दिए जाएंगे। उसके उपरांत महिला बंदी गृह, बालिका/महिला गृहों व आंगनबाड़ी केन्द्रों का निरीक्षण कार्यक्रम प्रस्तावित है।

पदाधिकारियों ने किया रक्तदान

चित्रकूट (आरएनएस)। विश्व हिन्दू परिषद बजरंग दल के तत्वावधान में हुतात्मा दिवस कार्यक्रम जिला मंत्री नीरज केसवानी की अध्यक्षता एवं जिला सहसंयोजक प्रणव भारद्वाज के नेतृत्व में हुआ। जिसमें 50 लोगों ने पंजीकरण कराया एवं 10 लोगों ने रक्तदान किया। जिला मंत्री ने बताया की विगत वर्षों पहले अयोध्या में राम मंदिर आंदोलन में शहीद लाखों लोगों की श्रद्धांजलि स्वरूप में यह हुतात्मा दिवस कार्यक्रम हर वर्ष विश्व हिंदू परिषद पूरे भारत में आयोजित करता है। कार्यक्रम में विभाग समरसता प्रमुख रामशरण, कोषाध्यक्ष जमुना प्रसाद, जिला मठ मंदिर प्रमुख अजय मिश्रा, गोरक्षा प्रमुख विमल, जिला

सेवा प्रमुख कामता, नगर अध्यक्ष उमाकांत, नगर उपाध्यक्ष जितेन्द्र, नगर सह मंत्री मनीष आदि ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए मां भारती की निष्ठापूर्वक सेवा के लिए अपना रक्तदान किया।

रोजगार मेला 26 को

जौनपुर (आरएनएस)। जिला सेवायोजन कार्यालय कैम्पस में 26 दिसम्बर, को रोजगार मेला का आयोजन किया गया है। जिसमें उ0प्र0 राज्य सड़क परिवहन निगम जौनपुर डिपो में चालको की भर्ती एवं निजी क्षेत्र की पुखराज हेल्थ केयर प्रा0लि0 कम्पनियों के द्वारा प्रतिभाग किया जाना है, परिवहन विभाग द्वारा 20 संविदा चालकों हेतु शैक्षिक योग्यता कक्षा– 8 पास, ड्राईविंग लाईसेंस–02 वर्ष पुराना वैध हैवी लाईसेंस, लम्बाई–05 फीट 03 इंच एवं आयुसीमा– 23 वर्ष 6 माह–40 वर्ष से अधिक नहीं होना चाहिए एवं निजी कम्पनियॉ द्वारा भर्ती की जायेंगी। रोजगार मेलें में प्रतिभागी अभ्यर्थी अपने समस्त शैक्षिणिक प्रमाण पत्रों सहित रोजगार मेले में योग्यतानुसार प्रतिभाग करते हुए विभिन्न पदों पर साक्षात्कार के माध्यम से रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।

वितरित किया तीन सौ कंबल

जौनपुर। (आरएनएस) शकील एजुकेशनल एण्ड सोशल वेल्फेयर ट्रस्ट सबरहद षाहगंज द्वारा जरूरतमंदों को कंबल वितरित किया। बतौर अतिथि इंजीनियर मो. कासिम ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह की मदद सभी को करनी चाहिए, जिससे गरीब, जरूरतमंद लोगों का भला हो सके। मुख्य अतिथि श्री कासिम और मो. इमरान ने लोगों को कंबल वितरित किया, जिसे पाकर उनके चेहरे खिल उठे। इस मौके फहीम अहमद, रेहान अहमद, फखरुल इस्लाम, फहद अहमद, प्रेमचंद, मो. आरिफ, शाहनवाज मंजूर आदि रहे।

बस का पहिया चक्का से हुआ अलग

सिराथू, कौशाम्बी। सदर कोतवाली क्षेत्र अंतर्गत नारा गाँव के पास बच्चों से भरी स्कूली बस का पहिया अचानक चलती गाड़ी से अलग हो गया। इसमें कई बच्चे मामूली रूप से घायल हो गए। उसी समय सड़क से गुजर रहा एक बच्चा पहिया की चपेट में आने से घायल हो गया। जिसका इलाज निजी हॉस्पिटल में चल रहा है। गनीमत रही कि बस पलटी नही, वरना बड़ा हादसा हो सकता था। बताया जाता है कि भरवारी कस्बे में स्थित एक पूर्व विधायक के स्कूल की बस शुक्रवार की सुबह स्कूली बच्चों को लेकर वापस आ रही थी, तभी सदर कोतवाली के नारा गाँव के पास अचानक बस का पिछला पहिया बाहर निकल गया। जिससे बस अनियंत्रित हो गई और पलटते पलटते बची। हादसे के वक्त बस की स्पीड कम होने के चलते बड़ा हादसा टल गया। हालांकि बच्चों को मामूली चोट आई है। लेकिन हादसे के समय नारा गाँव का एक बच्चा पहिए की चपेट में आने से घायल हो गय। जानकारी होने पर स्कूल के जिम्मेदारों ने तुरंत बच्चों को स्कूल बुला लिया। वही गाँव का जो बच्चा घायल हो गया था, उसको मंझनपुर के एक निजी हॉस्पिटल में भर्ती कराया है।

अभियान का किया भाुभारम्भ

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी संजीव रंजन एवं मुख्य विकास अधिकारी डा0 दिव्या मिश्रा ने जिला महिला चिकित्सालय में बच्चो को पोलियो की खुराक पिलाकर पल्स पोलियो अभियान का शुभारम्भ किया। जिलाधिकारी ने जनपदवासियों से अपील करते हुये कहा कि अपने बच्चों के बेहतर भविष्य के लिये 0 से 5 वर्ष तक के बच्चों को पोलियो की खुराक अवश्य पिलाये, कोई भी बच्चा पोलियो ड्राप की खुराक से वंचित न रहे। मुख्य चिकित्साधिकारी डा0 ए0एन0 प्रसाद ने बताया है कि जनपद प्रतापगढ़ में 2296 पोलियो बूथों पर कुल 440326 लक्षित बच्चों को पोलियो की खुराक पिलायी जानी है। इसके उपरान्त बच्चों को 1022 टीमों के द्वारा घर घर जाकर बच्चों पोलियो की दवा पिलाई जायेगी। इस अवसर मुख्य चिकित्साधिकारी डा0 ए0एन0 प्रसाद सहित स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे।

पहली बार 12 क्षेत्रीय भाषाओं में होगी अनाउंसमेंट

प्रयागराज। प्रयागराज उत्तर मध्य रेलवे महाकुम्भ – 2025 के लिए श्रद्धालुओं की यात्रा को सुखद, सुविधाजनक और यादगार बनाने हेतु हर संभव प्रयास कर रहा है। इस दिशा में, पहली बार बहुभाषीय अनाउंसमेंट (मल्टी लैंग्वेज अनाउंसमेंट) की व्यवस्था लागू कर रहा है, जिससे देश के विभिन्न कोनों से आने वाले श्रद्धालुओं को उनकी अपनी मातृभाषा में ट्रेन और अन्य संबंधित जानकारियाँ उपलब्ध होंगी। भारत में भाषाओं की विविधता को देखते हुए हिंदी और अंग्रेजी भाषा के साथ 12 अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में एनाउंसमेंट की जाएगी। इनमें गुजराती, मराठी, तमिल, तेलगू, मलायालम, कन्नड़, बंग्ला, असमिया, उड़िया और पंजाबी भाषाओं में एनाउंसामेंट किया जाएगा। इसके लिए रेल मंडल ने अन्य मंडलों से अनुभवी उदघोषकों को आमंत्रित किया है, जो आसानी से अपनी क्षेत्रीय भाषा में अनाउंसमेंट कर सकें। इससे भाषा की बाधा को दूर किया जा सकेगा और श्रद्धालुओं को महत्वपूर्ण जानकारियाँ स्पष्टता से प्राप्त होंगी। श्रद्धालुओं के लिए विशेष सुविधाएँ। महाकुंभ के दौरान, श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए रेलवे ने कई विशेष कदम उठाए हैं। आश्रय स्थलों की व्यवस्थारू यात्रियों को उनके गंतव्य स्थान के अनुसार आश्रय स्थलों पर ठहरने की सुविधा दी जाएगी। इन स्थलों पर आरामदायक माहौल के साथ–साथ स्पीकर लगाए जाएंगे, ताकि यात्री आसानी से अपनी ट्रेन और अन्य जरूरी जानकारी प्राप्त कर सकें। विशेष स्पीकर सिस्टमरू प्लेटफॉर्म और प्रतीक्षालयों के अलावा, आश्रय स्थलों में भी स्पीकर लगाए जा रहे हैं। इससे यात्रियों को उनकी ट्रेन के आगमन, प्रस्थान और अन्य जानकारियों की सूचना आसानी से मिल सकेगी। उत्तर मध्य रेलवे महाकुम्भ– 2025 के दौरान आने वाले लाखों श्रद्धालुओं को बेहतर सेवाएँ प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। रेलवे का यह बहुभाषीय अनाउंसमेंट सिस्टम न केवल भाषा के अंतर को खत्म करेगा, बल्कि यात्रियों की सुविधा और अनुभव को भी बेहतर बनाएगा।

महाकुम्भ ग्राम टेंट सिटी में उन्नत सीसीटीवी कैमरों से होगी सुरक्षा निगरानी

प्रयागराज। विश्व के सबसे बड़े सांस्कृतिक, आध्यात्मिक आयोजन महाकुम्भ 2025 की शुरूआत 13 जनवरी से प्रयागराज में होने जा रही है। महाकुम्भ को दिव्य और भव्य बनाने के लिए तैयारियां जोर शोर से चल रही हैं। इसी क्रम में भारतीय रेलवे भी महाकुम्भ में आने वाले श्रद्धालुओं को विश्व स्तरीय सुविधा देने का प्रबंध कर रहा है। भारतीय रेलवे महाकुम्भ में लगभग 3000 मेला स्पेशल ट्रेनों के साथ 1 लाख से अधिक यात्रियों के ठहरने के लिए आश्रय स्थल की व्यवस्था कर रहा है। वहीं दूसरी ओर भारतीय रेलवे की पर्यटन और आतिथ्य शाखा आईआरसीटीसी की ओर से महाकुम्भ में त्रिवेणी संगम के पास टेंट सिटी, महाकुम्भ ग्राम बनकर तैयार है। आईआरसी टीसी के महाकुम्भ ग्राम में पर्यटकों को रहने, खान–पान की विश्व स्तरीय सुविधाओं के साथ चिकित्सा और सुरक्षा सुविधा भी उपलब्ध करवाई जाएगी। महाकुम्भ ग्राम में बन कर तैयार हैं सुपर डीलक्स और विला टेंट हाउस। महाकुम्भ 2025 में प्रयागराज आने वाले श्रद्धालुओं, तीर्थयात्रिओं और पर्यटकों के लिए मेला प्राधिकरण, पर्यटन विभाग और भारतीय रेलवे सभी तरह की जरूरी सुविधाओं और व्यवस्थाओं का प्रबंध कर रहा है। इसी क्रम में भारतीय रेलवे की पर्यटन और आतिथ्य शाखा आईआरसीटीसी ने प्रयागराज में नैनी, अरैल क्षेत्र के सेक्टर नंबर 25 में लग्जरी टेंट सिटी महाकुम्भ ग्राम का निर्माण किया है।

भारतीय रेल द्वारा अपने सम्मानित श्रद्धालुओं/रेल यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुये महाकुम्भ मेला 2025 के दौरान विशेष रेलगाड़ी के संचालन का निर्णय लिया है, जिसका विवरण निम्नवत् हैः-

गाड़ी संख्या 04153/04154 कानपुर सेंट्रल-भागलपुर कुम्भ मेला विशेष रेलगाड़ी

गाड़ी संख्या - 04153 कानपुर सेंट्रल - भागलपुर			गाड़ी संख्या - 04154 भागलपुर - कानपुर सेंट्रल	
आगमन	प्रस्थान	स्टेशन	आगमन	प्रस्थान
सोम	14:00	कानपुर सेंट्रल ▲	04:30	बुध
15:10	15:12	फतेहपुर	02:18	02:20
16:40	16:45	प्रयागराज जं.	01:05	01:10
17:55	17:57	मिर्ज़ापुर	22:38	22:40
19:25	19:35	पं. दीन दयाल उपाध्याय जं.	21:20	21:30
20:58	21:00	बक्सर	19:10	19:12
21:50	21:52	आरा	18:18	18:20
23:18	23:20	दानापुर	17:40	17:42
23:45	23:55	पाटलिपुत्र	17:10	17:20
00:40	00:45	हाजीपुर	16:15	16:20
02:40	02:50	बरौनी	14:35	14:45
03:10	03:12	बेगूसराय	14:00	14:02
06:00	06:05	मुंगेर	13:00	13:05
07:43	07:45	सुल्तानगंज	11:23	11:25
09:15	मंगल	▼ भागलपुर	मंगल	11:00

कानपुर सेंट्रल से : गाड़ी संख्या 04153, प्रत्येक सोमवार, दिनांक 06.01.2025 से 17.02.2025 तक (13.01.2025 एवं 27.01.2025 को छोड़कर)।

भागलपुर से : गाड़ी संख्या 04154, प्रत्येक मंगलवार, दिनांक 07.01.2025 से 18.02.2025 तक (14.01.2025 एवं 28.01.2025 को छोड़कर)।

गाड़ी संरचना : सामान्य श्रेणी- 04, स्लीपर श्रेणी- 05, वातानुकूलित तृतीय श्रेणी- 06, वातानुकूलित तृतीय श्रेणी इकोनॉमी कोच- 03 एवं वातानुकूलित द्वितीय श्रेणी- 02

नोटः- ट्रेनों की समय-सारणी से सम्बंधित जानकारी हेतु हेल्पलाइन 139 या Rail Madad Mobile App या वेबसाइट railmadad.indianrailways.gov.in का प्रयोग करें।

महाकुम्भ 2025 रेलवे टोल फ्री नं0 1800 4199 139 | उत्तर मध्य रेलवे

@CPRONCR | North central railways | www.ncr.indianrailways.gov.in | 2181/24(A)

स्वच्छ पर्यावरण तथा स्वस्थ जीवन के लिए जन जागरूकता जरूरी – डा. नीरज

प्रयागराज। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद उत्तर प्रदेश के तत्वा धान में जिला विज्ञान क्लब प्रयागराज द्वारा स्वच्छ पर्यावरण तथा स्वस्थ जीवन के लिए जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन द्वारका प्रसाद गर्ल्स इंटरमीडिएट कॉलेज प्रयागराज में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सह जिला विद्यालय निरीक्षक श्री लाल बाबू मौर्य जी रहे। अपने संबोधन में सह जिला विद्यालय निरीक्षक ने बताया कि वास्तव में स्वस्थ जीवन का आधार स्वच्छ पर्यावरण ही है उन्होंने कहा कि जिला विज्ञान क्लब जन जागरूकता के लिए इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करता है जो बच्चों में स्वच्छ पर्यावरण की समझ विकसित करने में बहुत ही सहायक है कार्यक्रम की अध्यक्षता

राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी भारत के पूर्व अधिशासी सचिव नीरज कुमार द्वारा की गई। अपने संबोधन में डॉक्टर नीरज कुमार ने बताया की स्वच्छ पर्यावरण तथा व्यवस्थित दिनचर्या और संतुलित भोजन के द्वारा ही स्वस्थ जीवन प्राप्त होता है । इसके लिए छात्र–छात्राओं तथा समाज के अन्य लोगों को भी जागरूक करना आज के समय में अति आवश्यक है। कार्यक्रम में इंस्टीट्यूट आफ एप्लाइड साइंस के डॉ मोहम्मद मसूद द्वारा खाद्य पदार्थों में मिलावट का परीक्षण का प्रयोग प्रदर्शित किया गया इस कार्यक्रम में विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों के छात्र –छात्राओं के मध्य पोस्टर तथा स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान श्री नारायणी आश्रम बालिका इंटर कॉलेज प्रयागराज की श्रेयांशी को द्वितीय स्थान आरपी रस्तोगी इंटरमीडिएट कॉलेज प्रयागराज की राखी सोनी को तथा तृतीय स्थान डीपी गर्ल्स इंटर कॉलेज प्रयागराज की निधि कुमारी को प्राप्त हुआ स्लोगन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान जगत तारन गर्ल्स इंटर कॉलेज की यशवी सिंह को द्वितीय स्थान क्रासथवेट गर्ल्स इंटर कॉलेज प्रयागराज की अंशिका को तथा तृतीय स्थान डीपी गर्ल्स इंटर कॉलेज की सपना कुमारी पटेल को प्राप्त हुआ पुरस्कार वितरण सत्र में लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉदिनेश यादव मुख्य अतिथि रहे। मुख्य अतिथि तथा अन्य अतिथियों द्वारा छात्र –छात्राओं को पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र दिया गया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत विद्यालय की प्रधानाचार्या डॉ रंजना पांडे द्वारा किया गया जिला विज्ञान क्लब प्रयागराज के कोऑर्डिनेटर डॉलालजी यादव द्वारा सभी के प्रति धन्यवाद व्यापित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉमनोज मिश्रा द्वारा किया गया कार्यक्रममे सुनील तिवारी प्रदीप श्रीवास्तव श्रीमती सुशीला सिंह रीता यादव अंजली वर्मा विभिन्न विद्यालयों के छात्र छात्राएं उनके मार्गदर्शक शिक्षक शिक्षिकाएं तथा विद्यालय डीपी गर्ल्स इंटर कॉलेज की शिक्षिकाएं उपस्थित रही।

बाबा साहब का अपमान करना भाजपा और आरएसएस के खून में है – उज्जवल रमण सिंह

प्रयागराज। देश के गृह मंत्री को तत्काल इस्तीफा देना चाहिए और माफी मांगना चाहिए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आवाहन पर प्रयागराज स्थित कांग्रेस जिन्होंने उच्च न्यायालय के सामने स्थित बाबा साहब अंबेडकर की मूर्ति को साफ सुथरा करने के बाद सांसद उज्जवल रमण सिंह ने माल्यार्पण किया और कांग्रेस जनों ने बाबा साहब अंबेडकर अमर रहे का नारा लगाया आक्रोशित कांग्रेस जनों ने बाबा साहब का अपमान नहीं सहेगा हिंदुस्तान गृह मंत्री इस्तीफा दो गृह मंत्री माफी मांगो बुलंद करते हुए हाथों में बाबा साहब की तस्वीर और पोस्टर लेकर जुलूस निकाला जो सुभाष चंद्र बोस चौराहे पर आकर समाप्त हुआ कांग्रेस जनों को संबोधित करते हुए सांसद श्री उज्जवल रमण सिंह ने कहा की बाबा साहब का अपमान करना और बाबा साहब द्वारा लिखित संविधान को ना मानना या आरएसएस और भाजपा के नेताओं में हमेशा खून में रहा है गृह मंत्री अमित शाह ने संसद के अंदर झूठ बोला हिंदू कोड बिल को लेकर जबकि सत्यता यह है कि हिंदू कोड बिल भाजपा के उसे समय के

नेताओं आरएसएस के नेताओं को मंजूर नहीं था दिल्ली स्थित रामलीला मैदान में पंडित जवाहरलाल नेहरू और बाबा साहब का पुतला जलाया था और संविधान को जलाया था यह जनता में भ्रम फैला रहे थे की संसद में हिंदू कोड बिल पास हो गया जो हिंदुओं के धर्म के अनुसार नहीं था इसमें हिंदू धर्म का अपमान किया गया है लेकिन जनता ने जवाब दिया और कांग्रेस में 70 साल तक शासन किया और आज यह बाबा साहब की तस्वीर तो रखते हैं दिखाने के लिए लेकिन बाबा साहब के सिद्धांत विचार और उनके संविधान को या नहीं मानते उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य संजय तिवारी ने कहा कि महात्मा गांधी हो या बाबा साहब या पंडित जवाहरलाल नेहरू या सरदार पटेल या भारत का तिरंगा झंडा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ या उससे बने हुए नेता हिंदूवादी राजनीति करते हुए जनता में हिंदू मुसलमान करते रहे और संविधान को नहीं माने और आज यह संविधान को मानने का ढोंग रच रहे हैं जबकि संविधान बिहार में अपनी रोटी सेक रहे कार्यक्रम में प्रमुख रूप से हरकेश तिवारी प्रदीप मिश्रा अंशुमान मनीष मिश्रा रामकिशन पटेल अनिल पांडे बृजेंद्र मिश्रा अविनाश वर्मा अरुण तिवारी सुधाकर तिवारी पुजैल हाशमी दिनेश सोनी रचना पांडे अंजुम राकेश पटेल मनोज पासी इरशादुल्लाह महेश त्रिपाठी भोलानाथ तिवारी दिवाकर भारतीय राजेश राकेश इश्तियाक अहमद मोहम्मद इस्लाम प्रमुख रूप से उपस्थित एवं शामिल थे।

बुनियादी समस्याओं को लेकर समाजवादियों ने दिया धरना

कोरांव(प्रयागराज)सहकारी समितियों पर खाद की किल्लत,धान खरीदी में एमआई सहित अन्य जिम्मेदारानो की लापरवाही सहित अन्य बुनियादी समस्याओं को लेकर समाजवादियों ने एक दिवसीय धरना दिया।ज्ञापन भी सौंपा गया साथ ही आगाह किया गया कि यदि सुधार नहीं हुआ तो बड़ा आंदोलन किया जाएगा।जिला पंचायत सदस्य सोमदत्त पटेल ने कहा कि भाजपा की सरकार में नौकरशाही चरम पर है।एक भी सरकारी महकमा आमजन की बेहतरी में नहीं लगा हुआ है।प्रमोद पयासी ने संबंधित अधिकारियों को चेतावनी देते हुए कहा कि गरीब जनता, किसानों और मजदूरों के साथ किसी भी तरह का अन्याय नहीं होने दिया जाएगा।

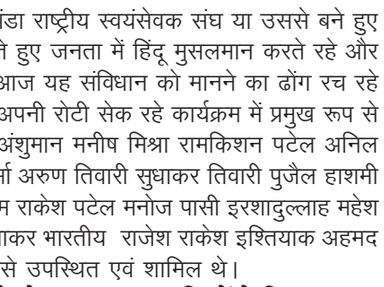

नैतिकता की अवधारणा थे अटल बिहारी- प्रोफेसर सत्यकाम

प्रयागराज। राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय,में अटल सुशासन सप्ताह के अंतर्गत अटल बिहारी बाजपेई की सौवीं जयंती के अवसर पर मंगलवार को लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में लोकतंत्र में नैतिक मूल्य विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया । जिसके मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता श्री मिथिलेश नारायण, क्षेत्र बौद्धिक शिक्षण प्रमुख, पूर्वी उत्तर प्रदेश, लखनऊ ने कहा कि अटल बिहारी बाजपेई लोक तांत्रिक मूल्य की रक्षा करते हुए सभी कार्य करते थे। वह सत्य के साथ कभी समझौता नहीं करते थे। उन्होंने कहा कि अटल जी की कविताएं रोटी कपड़ा मकान के लिए सीमित नहीं थीं। उनकी कविताएं भारतीय जीवन मूल्यों से ओतप्रोत थी। अटल जी कहते थे

विश्व के लिए सबसे बड़ी चुनौती पर्यावरण है यदि यह सुरक्षित ना रहा तो जीवन अस्त व्यस्त हो जाएगा। इसलिए आज पर्यावरण को संरक्षित करना हम सब की जिम्मेदारी है। अटल जी ने अनेक कीर्तिमान स्थापित किए जिनमें स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना आज फलीभूत हो रही है। उन्होंने कहा कि अटल जी का मानना था कि भारत केवल एक नक्शा नहीं है बल्कि हम सभी भारत हैं। विशिष्ट अतिथि राधाकांत ओझा,वरिष्ठ अधिवक्ता, उच्च न्यायालय, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज ने कहा कि आज अटल जी को मानने वाले बहुत हैं लेकिन उनकी विचारधारा पर लोगों को चल कर दिखाना पड़ेगा। समाज में जिस प्रकार नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, उसको बचाने के लिए हमें अटल जी के जीवन दर्शन को आत्म सात करना आवश्यक हो गया है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो अटल जी एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने न केवल नैतिक मूल्यों की स्थापना की बल्कि नैतिक मूल्यों के साथ जिए भी। उन्होंने कहा कि समाज में ऊंचे पद पर बैठे हुए लोगों का मूल्यांकन किया जा रहा है इसलिए हमें अपने नैतिक मूल्यों के प्रति वफादार रहना होगा। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए प्रोफेसर सत्यकाम, कुलपति, उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय ने कहा कि अटल जी नैतिकता की प्रतिमूर्ति के साथ ही नैतिकता की अवधारणा थे। जहां अहिंसा और शांति है, वहीं अटल जी हैं। भारत को शक्तिशाली बनाने के लिए अटल जी ने पोखरण में परमाणु परीक्षण किया। उन्होंने पूरे भारत को नई दिशा दी। उन्होंने भारतीय संस्कृति को केंद्र में रखा। धर्म और अधर्म का जो संवाद गीता में है, वही संवाद अटल बिहारी करते हैं। प्रोफेसर सत्यकाम ने कहा कि अटल जी के अंदर भारत को शक्तिशाली बनाने के लिए बड़ी उदारता तथा हृदय की विशालता थी। आज भी कोई व्यक्ति अटल जी की आलोचना नहीं करता। इससे पूर्व अतिथियों का स्वागत अटल सुशासन पीठ के निदेशक प्रोफेसर पीके पांडेय ने तथा विषय प्रवर्तन समाज विज्ञान विद्या शाखा के निदेशक प्रोफेसर एस कुमार ने किया। संचालन डॉ आनंदानंद त्रिपाठी एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ त्रिविक्रम तिवारी ने किया। प्रारंभ में कुलपति प्रोफेसर सत्यकाम ने अतिथियों का अंगवस्त्र, स्मृति चिन्ह एवं पौधा देकर सम्मान किया। जनसंपर्क अधिकारी डॉ प्रभात चन्द्र मिश्र ने बताया कि 25 दिसंबर को विश्वविद्यालय के सरस्वती परिसर में भारत रत्न पंडित अटल बिहारी बाजपेई के जन्मदिन पर उनकी प्रतिमा की स्थापना की जाएगी एवं अटल जी द्वारा रचित चुनी हुई कविताएं नामक पुस्तक का वितरण किया जाएगा। इसके साथ ही विश्व विद्यालय परिवार के स्वास्थ्य कल्याणार्थ प्राची अस्पताल से समझौता ज्ञापन होगा तथा कुम्भ अध्ययन में प्रमाण पत्र कार्यक्रम के संचालन संबंधी घोषणा कुलपति प्रोफेसर सत्यकाम करेंगे।

महान गणितज्ञ रामानुजन के जन्म दिवस पर रंगोली प्रतियोगिता आयोजित

प्रयागराज। ब्यूरो भारत के महान गणितज्ञ श्री निवास रामानुजन जन्मदिवस पर गणित मेला रंगोली प्रतियोगिता एवं बाल मेले के आयोजन में जय बजरंग इंटरमीडिएट कालेज के छात्र छात्राओं ने गणित विषय के विविध सूत्र,मनमोहक रंगोली प्रतियोगिता में भाग लेकर अपने हुनर को प्रदर्शित किया जिसे देखकर निर्णायक मंडल सहित सभी लोगों ने सराहना किया। विद्यालय के प्रबंधक अंजनी कुमार वर्मा ने कहा कि विद्यार्थी जीवन में गणित विषय का विशेष महत्व है तो रंगोली प्रतियोगिता में भाग लेकर बच्चों ने

अपनी रचनात्मक क्षमता को प्रदर्शित किया है। मालूम हो जय बजरंग इंटरमीडिएट कॉलेज रामनगर में विविध आयोजन जय बजरंग इंटर कॉलेज रामनगर परिसर में गणित दिवस पर प्रदर्शनी, रंगोली प्रतियोगिता एवं बाल मेले में सैकड़ो छात्र छात्रों ने प्रतिभाग करते हुए मॉडल, रंगोली तथा अलग–अलग माध्यमों से प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। मुख्य अतिथि जिला आयकर अधिकारी चंद्रप्रकाश विश्वकर्मा ने सभी मॉडलों एवं रंगोली का अवलोकन किया तत्पश्चात निर्णायक मंडल द्वारा प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वाले छात्र छात्राओं को अंकों के आधार पर प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में इंटरमीडिएट की छात्रा अंशिका मिश्रा को गणित मॉडल प्रदर्शनी में प्रदेश में चौथा स्थान मिलने पर सम्मानित किया गया ।इस मौके पर विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ राजेंद्र सिंह, विजय प्रकाश, धीरेन्द्र मिश्र, विवेक प्रजापति, संजय ग्वाला, संतोष त्रिपाठी,अमित पांडेय, इंद्रमणि यादव, वागीश तिवारी, दुष्यंत यादव, बृजेश सिंह, प्रदीप पाण्डे, लोकपति तिवारी समेत बड़ी संख्या में छात्र छात्राएं एवं शिक्षक मौजूद रहे।

अयोध्या आने वाले श्रद्धालुओं को रोमांचक अनुभव देगा सीता माता का भूल भूलेया

प्रयागराज। नगर निगम अयोध्या द्वारा मिरर इमेज (सीता माता की खोज) परियोजना श्रद्धालुओं के लिए प्रमुख आकर्षण का केंद्र बनेगी। 25 दिसम्बर 2024 को रामायण कालीन इतिहास पर आधारित इस परियोजना का शुभारंभ मा महापौर द्वारा जलकल परिसर, अमानीगंज में किया जाएगा। यह मिरर इमेज केंद्र राज्य स्मार्ट सिटी योजना के तहत 380.00 लाख की लागत से तैयार किया गया है। इस परियोजना के माध्यम से श्रद्धालुगण सीता माता की खोज के रोमांचक अनुभव का आनंद ले सकेंगे और उन्हें रामायण कालीन इतिहास की अद्भुत अनुभूति होगी। ज्ञातव्य है कि श्री राम जन्मभूमि प्राण प्रतिष्ठा समारोह के उपरांत अयोध्या आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। इस बढ़ती संख्या को ध्यान में रखते हुए नगर निगम ने यह मिरर इमेज केंद्र स्थापित किया है, ताकि श्रद्धालु केवल तीर्थाटन ही नहीं, बल्कि पर्यटन का भी आनंद ले सकें। नगर आयुक्त महोदय ने बताया कि अयोध्या एक प्राचीन धार्मिक, पौराणिक और आध्यात्मिक नगरी है, और इसके इतिहास को विश्वपटल पर प्रस्तुत करने के उद्देश्य से यह परियोजना शुरू की गई है।

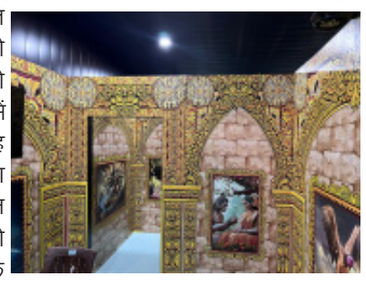

बकाया पैसा मांगने पर युवक को बंधक बनाकर चप्पल से पिटवाया

प्रयागराज। पट्टी अपनी बुआ के बेटे को पचास हजार रुपए उधार देना युवक को महंगा पड़ गया। बकाया पैसे का तगादा करने पर उसे अपने घर बुलाकर बंधक बना लिया। आरोप है की पत्नी के हाथों चप्पल से पिटाई करवाई तथा उसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। पीड़ित ने घटना की तहरीर पुलिस को दी है। इलाके के रेडी गारापुर निवासी अखिलेश कुमार हरिजन का आरोप है कि वर्ष 2021 में उसने अपने बुआ के बेटे पवन कुमार को बतौर कर्ज पचास हजार रुपए दिए थे। पैसा मांगने पर आरोपी टालमटोल करता रहा। इस दौरान दबाव बनाने पर पैसा देने के लिए उसे अपने घर बुलाया। आरोप है कि उसका पैर बांधकर अपनी पत्नी से चप्पलों से उसकी पिटाई करते हुए वीडियो बना लिया। जिसे सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया तथा धमकी दी की यदि पैसा मांगा तो फर्जी मुकदमे में फंसा दिया जाएगा। पीड़ित ने घटना की तहरीर पट्टी कोतवाली पुलिस को दी है।

प्रमुख सचिव,मण्डलायुक्त ने गोड़े बाईपास का किया औचक निरीक्षण

प्रयागराज। महाकुम्भ की तैयारियों के दृष्टिगत आवागमन में श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े इसके लिये लोक निर्माण विभाग के प्रमुख सचिव अजय चौहान, मण्डलायुक्त प्रयागराज विजय विश्वास पन्त ने जिलाधिकारी संजीव रंजन, पुलिस अधीक्षक डा0 अनिल कुमार, अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) त्रिभुवन विश्वकर्मा व लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों के साथ गोड़े बाईपास का निरीक्षण किया। उन्होने राजगढ़ पहुॅचकर निर्माणाधीन हाइवे एवं ओवरब्रिज का निरीक्षण

किया एवं सम्बन्धित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिये। उन्होने बाईपास के ओवरब्रिजों का निरीक्षण भी किया और गुणवत्ता का अवलोकन किया। उन्होने अधिकारियों को निर्देशित किया कि बाई–पास का निर्माण जल्द से जल्द कराया जाये जो भी काम अधूरे है उन्हें जल्द पूर्ण कराया जाये। उन्होने आवागमन हेतु चिलबिला ओवरब्रिज का भी निरीक्षण कर आवश्यक दिशा निर्देश दिये। इस दौरान मुख्य अभियन्ता राष्ट्रीय राजमार्ग लोक निर्माण विभाग ए0के0 जैन सहित लोक निर्माण विभाग व नेशनल हाईवे के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

हरिमोहन मालवीय को समन्वय रंगमंडल के कलाकारो ने दी श्रद्धांजलि

प्रयागराज। मंगलवार को वरिष्ठ साहित्यकार स्वर्गीय हरिमोहन मालवीय जी को समन्वय रंगमंडल कार्यालय गुलटेरिया भवन सुलेम सराय प्रयागराज में श्रद्धांजलि अर्पित किया। शोकसभा में कल्पना सहाय, डॉ. मधु शुक्ला, डॉ. शारदा पाठक, रंगकर्मी मीना उरांव शिव गुप्ता, अविचल द्विवेदी, सुशील राय, कवि – कलाकार रवीन्द्र कुशवाहा, विजय कुमार, जगदीश गौड़, अर्णव राय, विक्रांत कुमार केशरवानी, श्रेया सिंह, अभिषेक भारद्वाज, हर्सल राज इत्यादि वरिष्ठ रंगकर्मी– कवि–

कलाकारों ने शोक सभा में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की, संस्था की सचिव सुषमा शर्मा ने श्री हरि मोहन मालवीय के व्यक्तित्व पर विस्तृत प्रकाश डाला।

लखनऊ से आए बैंक के जीएम श्री रंजीव कुमार ने किया विंध्याचल शाखा का उद्घटान

प्रयागराज। लखनऊ से आए केनरा बैंक के जनरल मैनेजर श्री रंजीव कुमार ने अपने अधीनस्थ बैंक के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कहा कि वे बैंक के ग्राहकों के प्रति अच्छे ढंग से व्यवहार यदि करते हैं तो वही ग्राहक समाज में हमारी साख बढ़ाएगा। बैंक में आए छोटे से छोटे ग्राहक की पूरी मदद की जानी चाहिए, क्योंकि ग्राहक नहीं होगा तो बैंक भी नहीं रह सकेगा। जीएम 24 दिसंबर, मंगलवार को विंध्याचल में अपने अधीन 510वीं शाखा का उद्घाटन करते हुए बैंक के इतिहास पर विस्तृत प्रकाश डाला। श्री कुमार उपस्थित लोगों को 118 वर्ष पहले 1906 में बैंक की स्थापना की रोचक जानकारी दी तथा कहा कि इसकी स्थापना कर्नाटक के बैंगलोर में अधिवक्ता श्री सुब्बाराव ने की थी। उनका मानना था कि लोगों में बचत की प्रवृत्ति जब तक नहीं जागृत होगी तब तक साहूकारों की मुट्ठी से लोग निकल नहीं पाएंगे। वे घर–घर जाकर अनाज या जिसके पास जो कुछ बचत में है, उसे एकत्र करते थे और बदले में उसका खाता खोलकर उसे स्वावलंबी बनाने में लगे रहते थे।श्री कुमार ने कहा केनरा बैंक सार्वजनिक क्षेत्र की तीसरा सबसे बड़ा बैंक है और इसकी 10 हजार शाखाएं हैं। मिर्जापुर में यह पांचवां ब्रांच है। श्री कुमार ने स्थानीय लोगों की मांग पर कहा कि बैंक के तहत ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूली निर्धन बच्चों को जूता– मोजा आदि अवश्य दिया जाएगा। हेल्थ बीमा की जानकारी के क्रम में उन्होंने कहा कि महिलाओं के ब्रेस्ट कैंसर के उपचार के लिए एक लाख से 5 लाख तक का बीमा किया जाएगा। इसके लिए सिर्फ न्यूनतम 5 हजार से लेकर एक लाख तक का बैलेंस खाते में रखना होगा। इस अवसर पर इलाहाबाद से आए क्षेत्रीय प्रबंधक श्री वेदप्रकाश सहित विशिष्ट जनों में विंध्याचल के तीर्थ पुरोहित गुंजन मिश्र, सलिल पाण्डेय, कृष्ण गोपाल वर्मा आदि।

सम्पादक
सिद्धनाथ द्विवेदी
प्रबन्धक निदेशक
दीपक जयसवाल
सम्पादकीय कार्यालय
11ई/2, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, इलाहाबाद

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पीआरबी एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के आधीन होगा।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक सिद्धनाथ द्विवेदी द्वारा काम्पीटेंट बिजनेस सर्विसेज विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित एवं 399 कृष्णानगर कीडगंज से प्रकाशित।
सम्पादक–सिद्धनाथ द्विवेदी, आरएनआई नं. UPHIN/2007/22706 रजि.नं. AD-32/2008-09 ईमेलः amritkt.alld@gmail.com फोन नं. : 9453273951, 8799627062